भण्डारण भारती

अंक–56

केन्द्रीय भण्डारण निगम

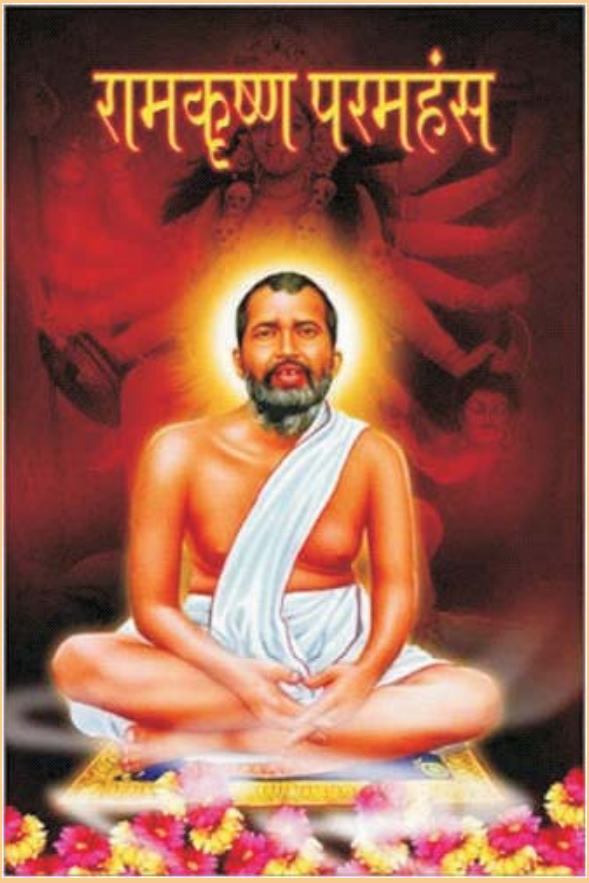

सुविचार

जिस प्रकार मैले दर्पण में सूरज का प्रतिबिंब नहीं पड़ता, उसी प्रकार मलिन अंत:करण में ईश्वर के प्रकाश का प्रतिबिंब नहीं पड़ सकता।

जनवरी-मार्च - 2015

मुख्य संरक्षक
हरप्रीत सिंह
प्रबंध निदेशक

संरक्षक
जे.एस. कौशल
निदेशक (कार्मिक)

परामर्शदाता
पवन कांत
महाप्रबंधक (कार्मिक)

मुख्य संपादक
नम्रता बजाज
प्रबंधक (राजभाषा)

संपादक
महिमानन्द भट्ट
वरिष्ठ सहायक प्रबंधक (राजभाषा)

उप संपादक
रजनी सूद, रेखा दुबे

सहायक संपादक
प्रकाश चन्द्र मैठाणी

संपादन सहयोग
संतोष शर्मा, नीलम खुराना,
शशि बाला, विजयपाल सिंह

केंद्रीय भण्डारण निगम
(भारत सरकार का उपक्रम)
4/1, सीरी इंस्टीच्यूशनल एरिया,
अगस्त क्रान्ति मार्ग, हौज खास,
नई दिल्ली-110016

यह पत्रिका निगम की वेबसाइट
www.cewacor.nic.in
पर भी उपलब्ध है।

मुद्रक: चन्दु प्रैस
डी-97, शकरपुर, दिल्ली-92
दूरभाष: 22526936

भण्डारण भारती

त्रैमासिक पत्रिका — अंक-56

	विषय	पृष्ठ संख्या
✦	प्रबंध निदेशक की कलम से...	3
✦	सम्पादकीय	4
आलेख		
❍	भण्डारण का इतिहास एवं वर्तमान परिप्रेक्ष्य में उसकी भूमिका –महिमानन्द भट्ट	5
❍	अनुवाद की समस्याएँ और समाधान –नम्रता बजाज	10
❍	हिन्दी का महत्व –दयानिधि अग्रवाल	15
❍	विचारों की दुनिया –प्रकाश चन्द्र मैठाणी	16
❍	हिन्दी से जुड़ी पौराणिक कथा –विजयपाल सिंह	18
कविताएं		
✪	बदलता इंसान –डॉ. मीना राजपूत	9
✪	खुशियों के प्यार भरे फूल –शेर जगजीत सिंह	14
✪	रिटायरमेंट का ख्याल –प्रताप नरायण गर्ग	15
✪	मंत्र की महिमा –मोहिनी मल्होत्रा	19
✪	प्रभु की शरण –नीलम खुराना	19
✪	वृक्ष बन्धु–जगत बन्धु –बलवन्त रंगीला	23
✪	मन दर्पण –लोकमणी शर्मा	25
✪	सेवा –सच्चिदानंद राय	25
✪	नया दौर –हरभजन सिंह	26
✪	प्यार व नफरत –पी.सी. भट्ट	37
✪	भोर हुई मुसाफिर, अब चल तू अपनी चाल... –स्नेहा मिश्रा	37
विविध		
⅄	ये विज्ञापन अच्छे हैं –रोहित उपाध्याय	8
⅄	अपने अपने काश –मीनाक्षी गंभीर	20
⅄	वृद्धाश्रम : वरदान या अभिशाप? –आयुष दुबे	22
⅄	वट वृक्ष की छाया –रजनी सूद	24
अन्य गतिविधियां		
✶	सचित्र समाचार	27
✶	सचित्र गतिविधियां	30
✶	निगमित कार्यालय में आयोजित स्थापना दिवस समारोह की झलकियाँ	32
✶	क्षेत्रीय कार्यालय में आयोजित स्थापना दिवस समारोह की झलकियाँ	33
✶	क्षेत्रीय कार्यालय में आयोजित हिन्दी कार्यशाला की झलकियाँ	35
✶	खेल समाचार –राजीव विनायक	36
✶	निगम का तुलनात्मक कार्य निष्पादन एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम	38
✶	सेवानिवृत्ति के अवसर पर.....	39

संपादक मंडल का लेखकों के विचारों से सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

केन्द्रीय भण्डारण निगम

लक्ष्य, दूरदर्शिता एवं उद्देश्य

लक्ष्य

सामाजिक दायित्वपूर्ण एवं पर्यावरण-अनुकूल ढंग से विश्वसनीय, किफायती, मूल्य संवर्द्धक तथा एकीकृत भण्डारण एवं लॉजिस्टिक्स समाधान सुलभ कराना।

दूरदर्शिता

हितधारी की संतुष्टि पर बल देते हुए भारत की विकासशील अर्थव्यवस्था के सम्बल के रूप में एकीकृत भण्डारण अवसंरचना एवं अन्य लॉजिस्टिक सेवाएं प्रदान करने वाले बाजार के एक अग्रणी संसाधक के रूप में खड़ा होना।

उद्देश्य

- वैज्ञानिक भण्डारण एवं संबंधित अवसंरचनात्मक सुविधाएं उपलब्ध कराते हुए कृषि, उद्योग, व्यापार व अन्य क्षेत्रों की परिवर्तनशील आवश्यकताओं की पूर्ति करना।
- भण्डारण, हैण्डलिंग एवं वितरण के दौरान होने वाली हानियों को कम करना।
- पर्यावरण अनुकूल विधियां प्रयोग करते हुए पैस्ट नियंत्रण सेवाओं के क्षेत्र में प्रमुख भूमिका निभाना।
- बैंकिंग संस्थाओं एवं गैर-बैंकिंग वित्तीय कम्पनियों के माध्यम से भण्डारित वस्तुओं के लिए ऋण उपलब्ध कराने की दिशा में भण्डारण (विकास एवं विनियमन) अधिनियम, 2007 के क्रियान्वयन में सहयोग करना।
- पोर्ट हैण्डलिंग, प्रापण एवं वितरण, कोल्ड चेन, भण्डारण वित्त पोषण, 3 पी.एल., परामर्शी सेवाएं, मल्टीमॉडल परिवहन जैसे क्षेत्रों में फारवर्ड और बैकवर्ड इंटीग्रेशन द्वारा लॉजिस्टिक्स वेल्यू चेन की योजना बनाना और विविधता लाना।
- भण्डारण और लॉजिस्टिक्स क्षेत्र में वैश्विक उपस्थिति दर्ज करना।
- ग्राहक संतुष्टि हेतु कर्मचारियों की प्रतिबद्धता, अभिप्रेरणा तथा उत्पादकता बढ़ाने के उद्देश्य से मानव संसाधन विकास कार्यक्रम की योजना बनाना तथा क्रियान्वित करना।

प्रबंध निदेशक की कलम से...

निगम द्वारा प्रत्येक तिमाही 'भंडारण भारती' पत्रिका का निरंतर प्रकाशन किया जाना प्रसन्नता की बात है। इस पत्रिका के माध्यम से निगम के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के साथ ही प्रबुद्ध पाठकों को भी निगम की विभिन्न व्यापारिक गतिविधियों सहित अन्य विषयों की जानकारी मिलती है।

आप सभी जानते हैं कि निगम की स्थापना 02 मार्च, 1957 को कृषि उत्पाद (विकास और वेअरहाउसिंग) कारपोरेशन्स अधिनियम, 1956 के अधीन हुई थी। प्रसन्नता की बात है कि गत वर्ष की भांति इस वर्ष भी निगमित कार्यालय तथा सभी क्षेत्रीय कार्यालयों में निगम का 59वाँ स्थापना दिवस मनाया गया। स्थापना दिवस के अवसर पर हम निगम की स्थापना से अब तक किए गए कार्यों को याद करते हैं और भविष्य के लिए समर्पित भाव से कार्य करने का संकल्प लेते हैं।

निगम ने हर वर्ष की तरह वर्ष 2015–16 के लिए 26 मार्च, 2015 को खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण विभाग के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए। समझौता ज्ञापन में निगम की 1550 करोड़ रु. प्रचालन से आय अर्जित करने सहित अतिरिक्त भंडारण क्षमता शुरू करने, जनसुविधाओं के विकास हेतु स्वच्छ भारत मिशन (एसबीएम) के अधीन योगदान देने के अलावा रेफरल सैंट्रल ग्रेन एनालिसिस लेबोरेटरी की स्थापना एवं आईसीपी, अटारी में ग्राहक संतुष्टि सर्वे जैसे कार्य शामिल किए गए हैं। इस संबंध में मेरा निगम के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से अनुरोध है कि वे समझौता–ज्ञापन के लक्ष्यों को प्राप्त करने के सभी प्रयास निरंतर जारी रखें।

राजभाषा हिंदी की प्रगति का जायजा लेने के उद्देश्य से संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उपसमिति द्वारा 16.01.2015 को आईसीडी, पुणे का राजभाषा निरीक्षण किया गया। माननीय सदस्यों ने आईसीडी, पुणे में किए जा रहे राजभाषा कार्यों की प्रशंसा करते हुए भविष्य में राजभाषा में और गति लाने के सुझाव भी दिए। निगमित कार्यालय तथा क्षेत्रीय कार्यालयों के राजभाषा अधिकारियों, अनुवादकों एवं राजभाषा से जुड़े अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए प्रत्येक वर्ष प्रशिक्षण अनुभाग द्वारा राजभाषा प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया जाता है। इसी श्रृंखला के तहत जनवरी माह में दो दिवसीय राजभाषा प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें 21 अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया। यह भी प्रसन्नता का विषय है कि नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम), दिल्ली द्वारा वर्ष 2013–14 के लिए राजभाषा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने हेतु निगम को 'विशेष प्रशंसा पुरस्कार' प्रदान किया गया है। साथ ही, निगम के दो अधिकारियों को भी नराकास के तत्वावधान में आयोजित प्रतियोगिताओं में प्रथम एवं तृतीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। इस प्रकार की उपलब्धियों से निश्चय ही हम सबका मनोबल बढ़ता है।

भंडारण तथा राजभाषा के क्षेत्र में प्रगति के पथ पर आगे बढ़ते हुए निगम अपने उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए निरंतर प्रयासरत है। मुझे आशा है कि सभी अधिकारी एवं कर्मचारी निगम के हित में सक्रिय भूमिका अदा करते हुए भविष्य में बेहतर परिणाम प्राप्त करने के लिए पूरी सत्यनिष्ठा, टीम वर्क एवं समर्पण की भावना से कार्य करने के लिए निरंतर प्रयासरत रहेंगे।

¼gjçhr flag½
çca/k funs'kd

संपादकीय

निगम की तिमाही पत्रिका का यह अंक स्थापना दिवस समारोह की झलकियों तथा अन्य गतिविधियों के साथ प्रस्तुत है। हमारा सदैव यह प्रयास रहता है कि पत्रिका में भंडारण, तकनीकी एवं अन्य रोचक तथा ज्ञानवर्धक सामग्री प्रकाशित कर इसके पाठकों को महत्वपूर्ण जानकारी उपलब्ध कराई जा सके। इसी दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए हमने इस अंक में भी भंडारण से संबंधित लेख के साथ-साथ राजभाषा हिन्दी, अनुवाद एवं अन्य रोचक विषयों को शामिल किया है। हमारा निगम वैज्ञानिक भंडारण के विभिन्न कार्यकलापों सहित निगमित सामाजिक दायित्वों के साथ-साथ प्रशिक्षण कार्यक्रमों, खेल गतिविधियों के आयोजन में भी सदैव अग्रणी रहा है। नराकास द्वारा निगम को राजभाषा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्यनिष्पादन के लिए पुरस्कृत किया जाना हम सभी के लिए गौरव और प्रसन्नता का विषय है। इस अंक में हमने नराकास से पुरस्कृत किए जाने संबंधी फोटोग्राफ एवं संसदीय राजभाषा समिति के निरीक्षण से संबंधित झलकियों को भी प्रमुखता के साथ प्रकाशित किया है।

भंडारण भारती पत्रिका के आगामी अंकों को और भी रोचक एवं ज्ञानवर्धक बनाने के लिए हम निरन्तर प्रयासरत हैं। इस पत्रिका के माध्यम से हम निगम के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों तथा अन्य पाठकों को विभिन्न गतिविधियों की जानकारी प्रदान करते रहेंगे। पत्रिका के सुधी पाठकों से वाणिज्यिक, तकनीकी एवं अनुसंधान आदि विभिन्न विषयों पर शोधात्मक लेखों की हमें सदैव अपेक्षा रहेगी ताकि यह पत्रिका उच्च से उच्चतम शिखर प्राप्त कर सके।

¼ueirk ctkt½
मुख्य संपादक

भण्डारण का इतिहास एवं वर्तमान परिप्रेक्ष्य में उसकी भूमिका

*महिमानन्द भट्ट

भारत एक कृषि प्रधान देश है। कृषि पुरातन काल से ही देश की अर्थव्यवस्था का आधार-स्तम्भ रही है। कृषि क्षेत्र में निर्भरता के कारण हमारा देश कृषि प्रधान देश के नाम से भी जाना-पहचाना जाता है। देश की बहुसंख्यक जनसंख्या गावों में रहती है और उनकी निर्भरता अपने मुख्य व्यवसाय कृषि पर है। प्रारंभ से ही घरेलू खाद्य जरूरतों को पूरा करना सबसे बड़ी सामाजिक प्राथमिकता महसूस की गई और खाद्य उत्पादन पर जोर दिया गया। देश की आवश्यकताओं के अनुरूप योजना, अनुसंधान एवं विकास के क्षेत्र में प्रगति के सोपान निरंतर रूप से आगे बढ़ते रहने के साथ-साथ खाद्यान्नों एवं अन्य कृषि-जिन्सों का समुचित उत्पादन सुनिश्चित कर विकास की दिशा में कदम आगे बढ़ता गया। मौजूदा आर्थिक परिस्थितियों में जब देश विश्व अर्थव्यवस्था के साथ जुड़ रहा है तब नई तकनीकी द्वारा प्रौद्योगिकी प्रक्रियाओं और उत्पादों का समुचित विकास करना एवं आर्थिक गतिविधियों में एक नई-स्फूर्ति लाना नितांत आवश्यक है।

जहाँ तक भण्डारण की संकल्पना का प्रश्न है, यह उतनी ही पुरानी है जितना कि स्वंय मानव। सभ्यता के प्रथम चरण से ही खाद्यान्नों को भविष्य की खपत (उपभोग) तथा बीज के लिए संचय किया जाता था। इस उद्देश्य के लिए गड्ढों, टोकरों, मिट्टी के बर्तनों तथा कोठरों तक में खाद्यान्न संचित किया जाता था जो मौसम की अनुकूलता तथा अन्य कारणों से ही सुरक्षित रह सकता था। ऐसे भी उदाहरण मिले हैं कि प्राचीन काल में आर्य लोग अनाज को अपने कोठरों में रखते थे जिसे माप कर रखा जाता था। भविष्य की चिन्ता ने मानव में संग्रह प्रवृत्ति को जन्म दिया। अपने अस्तित्व को बनाए रखने के लिए मानव खाद्य पदार्थ एवं अन्य उपयोगी वस्तुओं के उत्पादन के लिए जहाँ संघर्षरत रहा, वहीं उसके उचित भण्डारण के लिए भी निरंतर सजग रहा। बाइबिल में एक कथा आती है कि ईसा के प्रिय शिष्य जोसेफ ने एक स्वप्न देखा था कि इज़राइल में घोर अकाल पड़ेगा और कई वर्षों तक लोग जीवन के लिए संघर्ष करते रहेंगें। इसी बात को ध्यान में रखकर उसने खाद्य पदार्थों का संग्रह किया और कई लोगों के जीवन की रक्षा की। भारतीय धर्म ग्रन्थों में कुबेर को सभी संपदाओं का स्वामी कहा जाता है जो सारी भण्डारण व्यवस्था का प्रमुख माना जाता है।

खाद्य पदार्थों की निरन्तर प्राप्ति के अभाव, प्रकृति की अस्थिरता एवं अकाल आदि के दु:खद अनुभव ने मानव को इस बात के लिए विवश किया कि वह खाद्यान्नों को भविष्य के लिए भण्डारित करे और उसकी बर्बादी को रोके। कृषि के साथ-साथ वाणिज्य धीरे-धीरे एक आर्थिक शक्ति के रूप में उभरा। मौर्य काल में व्यापार से ही समुचित मात्रा में राजस्व प्राप्त होता था। वाणिज्य ने न केवल देश के भीतर बल्कि देश के बाहर भी अपनी विशिष्टता प्राप्त की। भारत ने अनेक पश्चिमी देशों के साथ व्यापार संबंध स्थापित किए। पाश्चात्य लोग भारत से सुन्दर मलमल जैसी विलास सामग्री का आयात करने लगे। मिस्र, सीरिया तथा चीन से भारत के व्यापारिक संबंध थे। मुख्य आयातों में सोना-चाँदी, कच्चा रेशम तथा दवाएँ थीं तथा प्रमुख निर्यातों में कपड़ा, मिर्च, अफीम तथा औषधियाँ थीं। समुद्री मार्गों से व्यापार के लिए बन्दरगाह थे। मौर्य सरकार ने समुद्री जहाजों का निर्माण किया तथा उन्हें भारत और अन्य देशों के बीच वस्तुओं के परिवहन के लिए किराये पर दिया। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि भण्डारण सुविधाएँ बन्दरगाहों पर उपलब्ध थीं जो अल्प-विकसित थीं तथा

* वरिष्ठ सहायक प्रबंधक (राजभाषा), निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

इनका उपयोग विदेश व्यापार की वस्तुओं की रक्षा के लिए किया जाता था। ऐसा कहा जाता है कि 13वीं शताब्दी के दौरान इंग्लैंड के बर्गेस नामक स्थान पर एक परिवार था जो प्रमुख होटलों तथा भण्डारगृहों का मालिक था। समीपता के कारण व्यापारी व्यापार हेतु वहाँ मिलते थे जहाँ नमूनों द्वारा अधिकतर विक्रय कार्य किया जाता था।

मध्यकालीन यूरोप के वाणिज्य के इतिहास का अध्ययन से यह पता चलता है कि वाणिज्य के प्रसार के लिए अन्य सुख-सुविधाओं के अतिरिक्त टेम्स नदी के किनारे वेअरहाउसों का निर्माण किया गया था। वेअरहाउसों में भण्डारित माल की सुरक्षा सामान्यतया राज्य की जिम्मेदारी मानी जाती थी। 19वीं शताब्दी में इंग्लैण्ड में कई वेअरहाउस बनाए गए। ऐसा कहा जाता है कि चार्ल्स डिकन ने लंदन में स्थित एक वेअरहाउस से अपना जीवन आरंभ किया। कृषि क्रान्ति के साथ-साथ औद्योगिक क्रान्ति के परिणामस्वरूप पश्चिमी गोलार्द्ध में आर्थिक विकास का चमत्कारिक रूप से उत्थान हुआ। औद्योगिक क्रान्ति की कल्पना फ्रांस से शुरू हुई जिसका जन्म इंग्लैण्ड में हुआ और संयुक्त राष्ट्र अमेरिका जो समूचे संसार को खिलाने का दावा करता है वही अनाज का उत्पादन दो शताब्दी पहले तक अपने ही उपयोग के लिए कर पाता था और कृषि उत्पादन का कुछ भाग ही बाजार में बेच पाता था।

आर्थिक विकास व्यापार एवं वाणिज्य के प्रसार के परिणामस्वरूप विविध श्रेणियों के भण्डारगृहों की आवश्यकता अनुभव की गई ताकि संचय व्यवस्था तथा बची हुई वस्तुओं की खपत की जा सके। इसके लिए कई प्रकार के गोदाम बनाए गए जैसे घरेलू माल गोदाम, फैक्ट्री, फार्म, मिल भण्डार, शाखा भण्डार, विशेष वस्तु गोदाम, सूती कपड़ा गोदाम, ऊन गोदाम, आलू गोदाम आदि। विदेश व्यापार हेतु आयात-निर्यात शेडों की आवश्यकता अनुभव हुई। बड़े बन्दरगाहों में पारगमन डिपुओं की स्थापना भण्डारण आवश्यकता की पूर्ति के लिए की गई। जब तक वस्तु की बाजार में समुचित मांग नहीं होती उस समय तक माल के मात्रात्मक और गुणात्मक मूल्यों को बनाए रखने के लिए उसे गोदाम में वैज्ञानिक ढंग से परिरक्षण करने की आवश्यकता होती है ताकि मात्रा तथा गुणात्मक मूल्यों का सही ढंग से रखरखाव किया जा सके।

वर्तमान संदर्भ में भण्डारण की संकल्पना पुरानी होने पर भी कहीं अधिक व्यापक है। इसमें वस्तुओं की

गुणवत्ता बनाए रखना, उनका परिरक्षण एवं मानकीकरण आदि कार्य आते हैं। भण्डारण से संबंधित कार्य जैसे रख-रखाव, परिवहन, विक्रय एवं वितरण आदि सेवाएँ भी इसके अधीन उपलब्ध कराई जाती हैं। आजादी के बाद यह महसूस किया गया कि इस तरह की कोई व्यवस्था होनी चाहिए जिससे आवश्यक वस्तुओं का उचित भण्डारण किया जा सके, चूँकि भण्डारण एक ऐसी व्यवस्था है जिसके लिए बड़े-बड़े गोदामों और वैज्ञानिक उपकरणों की आवश्यकता होती है। मूल्य नियंत्रण एवं आर्थिक व्यवस्था के लिए भण्डारण व्यवस्था का विशेष महत्व है। पहले किसान भण्डारण सुविधाओं के अभाव में तथा धन की कमी के कारण फसल तैयार होते ही कम मूल्य पर इसे बेच देते थे लेकिन भण्डारण व्यवस्था के अन्तर्गत अब संग्रह सुविधाओं तथा ऋण-सुविधाओं के कारण किसान फसल का उचित मूल्य प्राप्त कर सकते हैं। रख-रखाव एवं परिवहन व्यवस्था के अतिरिक्त वितरण लागत भी इससे कम आती है।

वेअरहाउसिंग का नारा है- उपजाओ, संभाल कर रखो एवं खुशहाल बनो। वेअरहाउसिंग के इस नारे में वेअरहाउसिंग की पूरी संकल्पना के दर्शन होते हैं। उत्पादन एवं परिरक्षण से लेकर खुशहाली की भावना को लेकर भण्डारण व्यवस्था आज देश की प्रगति में निरन्तर योगदान दे रही है। आने वाला समय बताएगा कि इस दिशा में कहाँ तक प्रगति हो पाएगी लेकिन यह व्यवस्था समय के साथ-साथ विकसित होगी। आज की भण्डारण व्यवस्था सामान्य भण्डारण पर आधारित न होकर उससे आगे बढ़ चुकी है। बॉन्डेड वेअरहाउसों एवं कंटेनर फ्रेट स्टेशनों के माध्यम से इसमें बहुत परिवर्तन

आया है। कौन-सी व्यवस्था भविष्य में भण्डारण की माँग करेगी, यह समय और परिस्थितियों पर निर्भर करता है, किन्तु भण्डारण के लिए निरन्तर अनुसंधान और चिंतन की आवश्यकता है। वैज्ञानिक भण्डारण की दिशा में आज कीटनाशन सेवाओं एवं प्रधूमन कार्य की व्यवस्था कर भण्डारित माल का परिरक्षण किया जाता है। सरकार व सरकार द्वारा प्रायोजित संस्थाओं की मूल्य समर्थन एवं मूल्य नियंत्रण में सहायता देना एवं भण्डारण तकनीकों के लिए शिक्षण-प्रशिक्षण की व्यवस्था करने के साथ-साथ भण्डारित माल के लिए ऋण-सुविधाओं का मार्ग प्रशस्त करना जैसी सुविधाएँ आज विद्यमान हैं। इसके अतिरिक्त किसानों को भण्डारण की वैज्ञानिक तकनीकों की जानकारी देकर उन्हें अन्न सुरक्षा की प्रेरणा दी जाती है। भण्डारण व्यवस्था के अन्तर्गत आज गुणवत्ता नियंत्रण सेवाएँ उच्च स्तर की हैं। वैज्ञानिक तकनीकों के परिणामस्वरूप भण्डारण क्षतियों को कम करने की दिशा में विशेष सफलता हासिल की गई है।

आज उत्पादन को बढ़ाना तथा भविष्य के लिए उसे सुरक्षित रखना देश की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। भण्डारण के माध्यम से खाद्यान्नों को सुरक्षित रखना राष्ट्रहित में बहुत उपयोगी है। भण्डारण की लाभकारी योजनाओं में तेजी लाकर भण्डारण क्रान्ति की लहर पूरे देश में फैलाकर आत्म-निर्भरता की ओर बढ़ा जा सकता है। आज भण्डारण के लिए विभिन्न सेवाएँ प्रदान की जा रही हैं। भण्डारण में जमा होने वाली वस्तुओं को अच्छी तरह तोला जाता है, नमूने लिए जाते हैं, विश्लेषण किया जाता है और उनका श्रेणीकरण किया जाता है। इसके अतिरिक्त जमा माल का आग, चोरी एवं सेंधमारी के लिए बीमा कराया जाता है। जमाकर्ता वेअरहाउस में जमा की गई वस्तुओं के बदले में वेअरहाउस रसीद प्राप्त कर सकते हैं। इस वेअरहाउस रसीद को बैंक में जमा कर ऋण लिया जाता है। भण्डारगृह में चट्टों की इस ढंग से योजना बनाई जाती है ताकि उनका सहज निरीक्षण और रख-रखाव किया जा सके तथा इनका संचालन योग्यता प्राप्त एवं प्रशिक्षित कार्मिकों द्वारा किया जाता है। जमाकर्ताओं के अनुरोध पर अधिकतर वेअरहाउसों पर रख-रखाव तथा परिवहन सुविधाएँ प्रदान की जाती हैं। यह कार्य प्रतियोगी दरों पर नियुक्त ठेकेदारों के माध्यम से किया जाता है। जमाकर्ता के अनुरोध पर माल को रेल द्वारा अन्य स्टेशनों पर भी भेजा जाता है। चुनिन्दा केन्द्रों पर शीघ्र खराब होने वाली वस्तुओं के भण्डारण के लिए शीतागार तथा वातानुकूलित सेवाएँ भी प्रदान की जाती हैं। औद्योगिक उत्पादों के भण्डारण के लिए वेअरहाउस तथा आयातित वस्तुओं के भण्डारण के लिए न केवल बन्दरगाह वाले शहर में वरन् अन्तर्देशीय स्थानों पर भी बॉन्डेड वेअरहाउसों की स्थापना की गई है। राज्य भण्डारण निगमों, राज्य सरकारों, सहकारी समितियों तथा अन्य संगठनों के प्रबन्धकीय व तकनीकी संवर्ग के कार्मिकों के प्रशिक्षण की आज व्यवस्था की गई है ताकि सभी को वेअरहाउसिंग तकनीकी की भरपूर जानकारी मिल सके।

नि:संदेह आज एक कार्यकुशल भण्डारण व्यवस्था की नितान्त आवश्यकता है। मूल्यों के स्थिरीकरण में भण्डारण उद्योग का महत्वपूर्ण योगदान है जो उत्पादकों एवं उपभोक्ताओं दोनों के लिए वरदान है। समय की मांग है कि आर्थिक गंगा रूपी प्रवाह के समान विभिन्न स्थानों पर भण्डारण रूपी आर्थिक मन्दिर की योजना के नए युग का सूत्रपात हो। भण्डारण का प्रकाश सूर्य की किरणों की तरह स्वंय नहीं फैलता, इसके लिए भगीरथ प्रयास की आवश्यकता होती है। भण्डारण की सुविधाओं के आधुनिकीकरण से उत्पादों का बेहतर और लाभदायक ढंग से उपयोग सुनिश्चित किया जा सकता है जिसके लिए आज गम्भीरता से प्रयास करने की आवश्यकता है और यह समय की मांग भी है।

ये विज्ञापन अच्छे हैं

*रोहित उपाध्याय

आज के युग को यदि विज्ञापन का युग कहा जाए तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। विज्ञापन हमारी जिंदगी में कुछ इस तरह रच बस गए हैं कि सुबह आँख खुलने से लेकर रात सोने तक हमारा पीछा नहीं छोड़ते। नमक जैसी आम वस्तु से लेकर करोड़ों की कीमत वाली आलीशान इमारतों के विज्ञापन हमारी रोजमर्रा की जिंदगी का अहम हिस्सा बन गए हैं। यदि हम कोई भी समाचार–पत्र या पत्रिका उठाएं तो उसमें समाचार से अधिक विज्ञापन नजर आते हैं। समाचार–पत्र के पहले पृष्ठ पर छपने वाली खबरों को विज्ञापनों ने तीसरे पृष्ठ पर धकेल दिया है। चौराहों पर जन्म दिवस की बधाई देते हुए बिलबोर्ड और बैनर दिखते हैं तो सड़कों पर लगे खम्भे भी विज्ञापनों से अछूते नहीं रह पाए हैं। विज्ञापनों की इस मायावी दुनिया से रेडियो, टी.वी., मोबाइल, सिनेमा, इंटरनेट कोई भी बच नहीं सका है।

भूमण्डलीकरण ने विश्व को बहुत छोटा बना दिया है। आज समूचा विश्व एक गांव बन गया है। सही मायने में दूरियाँ नजदीकियाँ बन गई हैं। वर्तमान सन्दर्भ में भूमण्डलीकरण का अर्थ व्यापक तौर पर बाजारीकरण है। इस युग में संचार माध्यमों का विकास बहुत तेजी से हुआ है। आज भले ही हम अपने पड़ोसी को न पहचानते हों पर पड़ोसी देश में क्या हो रहा है, इसकी खबर रखते हैं।

किसी भी वस्तु के प्रचार–प्रसार के लिए विज्ञापन अत्यन्त आवश्यक है। आज 'जो दिखता है वहीं बिकता है।' यदि किसी वस्तु का विज्ञापन हमने कभी नहीं देखा हो तो हम उसे संशय की दृष्टि से देखते हैं और खरीदने से पहले दस बार सोचते हैं। वहीं दूसरी ओर, घटिया–से–घटिया वस्तु का टी.वी. या अखबार में शानदार विज्ञापन देखते ही हमारा मन उसे खरीदने के लिए लालायित हो उठता है।

आज उपभोक्तावाद या बाजारवाद के इस युग में हर उत्पादक उपभोक्ता को तरह–तरह से लुभाने की कोशिश कर रहा है। ऐसे में विज्ञापन की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण हो जाती है। चौबीस घण्टे चलने वाले टी.वी. चैनलों, एफ.एम. रेडियो, पत्र–पत्रिकाओं और इंटरनेट पर आज विज्ञापनों का ही बोलबाला है। इन सभी संचार माध्यमों के लिए भी विज्ञापन आवश्यक हैं क्योंकि विज्ञापनों से प्राप्त आय से ही यह सब अपना वजूद कायम रखे हुए हैं।

विज्ञापनों की दुनिया में आज हिन्दी का जादू सर चढ़कर बोल रहा है। इस देश का सबसे बड़ा उपभोक्ता है– मध्यम वर्ग। अभिजात्य वर्ग, जो महंगी कारों, घड़ियों, मोबाइल फोन इत्यादि का उपभोक्ता है, को आप अपना उत्पाद अंग्रेजी भाषा में बेच सकते हैं, लेकिन मध्यम और निम्न वर्ग को रिझाने के लिए आपको उनकी ही भाषा में बात करनी होगी। आज पूरा विज्ञापन जगत हिन्दी को बढ़ावा देने के लिए नहीं बल्कि अपनी इसी मजबूरी के कारण इसे अपना रहा है।

आज हिन्दी बाज़ार की भाषा बन गई है। हिन्दी विज्ञापन इस मध्य वर्ग के दिल में सीधे उतरते हैं। टाटा नमक 'देश का नमक' हो जाता है तो वोल्टास 'देश का ए.सी.' बन जाता है। 'हीरो' मोटर साइकिल 'देश की धड़कन' बनकर आपको पुकारती है, तो 'कैडबरी' चॉकलेट आपको 'स्वाद ज़िंदगी का' याद दिलाती है। शुद्ध हिन्दी के साथ 'हिंग्लिश' का प्रचलन भी विज्ञापनों में काफी बढ़ा है। माल बेचने के लिए आज सब कुछ जायज समझा जा रहा है। आप स्वयं हिंग्लिश विज्ञापनों की एक बानगी देखिए–

मैगी	– टेस्ट भी, हेल्थ भी
डालडा	– डिब्बा खाली, पेट फुल
लक्स कोज़ी	– अपना लक पहन कर चलो

* तकनीकी सहायक, क्षेत्रीय कार्यालय, नवी मुंबई

पेप्सी – यही है राइट चॉइस, बेबी ये दिल मांगे मोर
पेप्सी आई.पी.एल. – ये है इंडिया का त्योहार

पेप्सी का 'ये दिल मांगे मोर' तो कारगिल युद्ध के समय भारतीय सेना का विजय उद्घोष बन गया था।

यदि देखा जाए तो हिंग्लिश की तुलना में शुद्ध हिन्दी वाले विज्ञापनों ने उपभोक्ता पर अपनी छाप अधिक छोड़ी है। भारतीय जीवन बीमा निगम 'जहाँ ज़िंदगी के साथ भी, ज़िंदगी के बाद भी' आपका साथ देने का वादा करता है वहीं एच.डी.एफ.सी. लाइफ इंश्योरेन्स आपको 'सर उठा के जियो' की प्रेरणा देता है। बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ भी हिन्दी उपभोक्ता को रिझाने में पीछे नहीं रही हैं– 'लाइफबॉय'– 'लाइफबॉय है जहाँ, तंदुरुस्ती है वहाँ' तो 'बोर्नविटा'– 'तन की शक्ति, मन की शक्ति' बनकर बच्चों को लुभा रहा है। 'बस दो मिनट' वाली मैगी तो बच्चों में बेहद लोकप्रिय है। भारत सरकार के हिन्दी विज्ञापन अभियान भी बेहद सफल रहे हैं चाहे वो 'पल्स पोलियो अभियान' का 'दो बूँद ज़िंदगी की' हो या 'स्वच्छ भारत अभियान' का 'एक कदम स्वच्छता की ओर' हो अथवा 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' अभियान हो। ये सभी हिन्दी के बिना अधूरे हैं।

बाज़ारवाद के इस असर से हमारे हिन्दी विद्वान बेहद चिंतित नज़र आ रहे हैं। उन्हें विज्ञापन की हिन्दी फूहड़ और संस्कारहीन लगती है। मेरा तो मानना है कि विज्ञापन की हिन्दी अभिजात्य और आम आदमी की भाषा का अन्तर मिटा रही है। यह हिन्दी प्रचलित और सबकी समझ में आने वाली हिन्दी है। आज हिन्दीतर भाषा–भाषी प्रदेशों में यदि हिन्दी धड़ल्ले से बोली और समझी जा रही है तो इसमें हिन्दी विज्ञापनों का भी कहीं–न–कहीं योगदान है।

हिन्दी बाज़ार की भाषा भले ही बन गई हो पर बाज़ारू नहीं बनी है। माना कि उसकी चुनरी पर अंग्रेजी के कुछ दाग़ लग गए हों लेकिन हिन्दी के बढ़ते प्रचार–प्रसार को देखते हुए हम तो यही कहेंगे कि– 'दाग़ अच्छे हैं' और 'ये दिल मांगे मोर'।

बदलता इंसान

*डॉ. मीना राजपूत

अपने को बड़े–बड़ों के आगे सभ्य मानने वाला
ऊँची और बड़ी सोसाइटी का दम्भ भरने वाला
खुद को प्रगतिशील और आधुनिक जानने वाला
बीमार मानसिकता का शिकार होता जा रहा है।

इंसान कितना बदलता जा रहा है,
क्या था और क्या होता जा रहा है।

कारण–कार्य संबंधों का तर्कसंगत हल ढूंढने वाला
यथार्थ की सच्चाई से बौद्धिक ढंग से जूझने वाला
हर वस्तुस्थिति का अन्तरंग विश्लेषण करने वाला
सतही तर्क–वितर्क में सिद्धहस्त होता जा रहा है।

इंसान कितना बदलता जा रहा है,
क्या था और क्या होता जा रहा है।

समझ और अनुभव का प्रमाण प्रस्तुत करने वाला
नये व पुराने विचारों के बीच संघर्ष चलाने वाला
पीढ़ी की उलझनों और कुंठाओं को समझने वाला
झूठी–संवेदनहीन बातों में रमता चला जा रहा है।

इंसान कितना बदलता जा रहा है,
क्या था और क्या होता जा रहा है।

हरेक के अस्तित्व को पुरजोर महत्व देने वाला
अपने आप को नित नए बंधनों में कसने वाला
बड़े–छोटों में भरपूर आदर व प्यार लुटाने वाला
अनोखी अंधेरी दुनिया में उलझता जा रहा है।

इंसान कितना बदलता जा रहा है,
क्या था और क्या होता जा रहा है।

* सहायक प्रबन्धक (राजभाषा), क्षेत्रीय कार्यालय, नवीं मुम्बई

अनुवाद की समस्याएँ और समाधान

*नम्रता बजाज

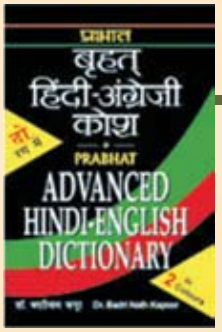

कहते हैं भाषा का जन्म व्यक्तियों में आपसी विचार–विनिमय के प्रयास से हुआ तो अनुवाद का जन्म दो भाषा – भाषी व्यक्तियों या समुदायों में विचार–विनिमय संभव बनाने के लिए हुआ। आज के आधुनिक युग में वैश्वीकरण होने के कारण सारा विश्व सिमट–सा गया है और सभी को एक–दूसरे से किसी न किसी कार्य के लिए संपर्क करना पड़ता है। हम सभी को पता है कि जितनी जल्दी हम किसी तकनीक, विज्ञान या विषय को अपनी परिचित भाषा अथवा अपनी भाषा में सीख सकते हैं, उतनी जल्दी हम किसी विदेशी भाषा अथवा अपरिचित भाषा में नहीं सीख सकते। अनुवाद की सहायता से हमारे सम्मुख अपरिचित भाषाओं का साहित्य हमारी भाषाओं में उपलब्ध हो जाता है। आधुनिक युग में विभिन्न क्षेत्रों में प्रगति होने के कारण अनुवाद एक सामाजिक आवश्यकता बन गया है।

आज अनुवाद का क्षेत्र इतना व्यापक हो गया है कि वर्तमान शताब्दी को 'अनुवाद युग' कहा जाने लगा है। प्रो. कृष्ण कुमार गोस्वामी ने अपनी पुस्तक 'अनुवाद विज्ञान की भूमिका' में आज के संदर्भ में जो परिभाषा दी है, वह इस प्रकार है : स्रोत भाषा में व्यक्त पाठ्य सामग्री का निकटतम समतुल्यता के आधार पर लक्ष्य भाषा की पाठ्य सामग्री में पुनर्सृजन करना अनुवाद है। इस परिभाषा में 'समतुल्यता' और 'पुनर्सृजन' से अभिप्राय है समान और सहज अभिव्यक्ति जो लक्ष्य भाषा की प्रकृति के अनुरूप हो।

अनुवाद की अनिवार्य शर्त है कम–से–कम दो भाषाओं का ज्ञान। चूँकि दो भाषाओं के अनुभव की उपलब्धि और अभिव्यक्ति पूर्णतया एक प्रकार से नहीं होती, इसलिए 'पूर्ण अनुवाद' नहीं हो पाता बल्कि 'लगभग अनुवाद' हो पाता है। इस प्रकार प्रत्येक स्तर पर – अर्थ के स्तर पर या व्याकरण के स्तर पर – अनुवाद की अपनी सीमा होती है और वह चाहे कितना भी अच्छा क्यों न हो, मूल कृति के समान नहीं हो सकता। अनुवाद स्रोत भाषा में संप्रेषित भाव और अर्थ को लक्ष्य भाषा में मूर्त रूप प्रदान करने का प्रयास करता है। अनुवाद में रूप और अर्थ का विशेष स्थान है। अनुवाद की प्रक्रिया मौलिक लेखन से अधिक जटिल और कठिन है क्योंकि इसमें न केवल अर्थ का संप्रेषण होता है अपितु मूल कृति के सूक्ष्म अर्थ की पुनःसर्जना भी होती है।

अनुवाद की समस्याओं ने इसे बहुआयामी, बहुप्रयोजनी और बहुदिशात्मक बनाने के साथ–साथ विवादास्पद भी बना दिया है। संक्षेप में कहा जाए तो अनुवाद की तीन प्रमुख समस्याएँ हैं – भाषागत, विषयगत और सामाजिक–सांस्कृतिक। भाषागत समस्या व्याकरणिक रूपों से जुड़ी है। विषयगत समस्या के भीतर साहित्यिक और साहित्येत्तर विषय आते हैं और सामाजिक–सांस्कृतिक समस्या सबसे अधिक जटिल है क्योंकि इसमें दोनों भाषाओं के समाज, संस्कृति, परंपरा और जीवन–शैली का प्रश्न उठता है। इनके अतिरिक्त प्रत्येक अनुवाद की अपनी विशिष्ट समस्या या कठिनाई भी होती है।

अनुवादक जब अनुवाद करना प्रारंभ करता है तो उसके सामने सबसे पहले उपयुक्त पर्याय के चयन की समस्या आती है। मोटे तौर पर, शब्द दो वर्गों में विभाजित किए गए हैं – एक सामान्य शब्द और दूसरे पारिभाषिक शब्द। अनुवाद में एक बड़ी समस्या यह आती है कि वह इनमें से किसका चयन करे। उदाहरण के लिए, अंग्रेजी के एक शब्द Fine के अनेक अर्थ मिलते हैं– सुंदर, अच्छा, उत्तम, सुसंस्कृत, सूक्ष्म, बारीक आदि। व्यक्ति का विशेषण होने की स्थिति में इस शब्द के लिए उपयुक्त पर्याय होगा, अच्छा या सुसंस्कृत। इसी प्रकार भाषण आदि के संदर्भ में 'सुंदर' व कपड़े आदि के लिए प्रयुक्त होने पर 'बारीक' पर्याय ग्राह्य हो सकता है। किंतु संज्ञा के रूप में Fine शब्द का अर्थ 'जुर्माना' होता है। यदि हम निम्नलिखित वाक्यों की ओर देखें तो एक शब्द का अलग–अलग वाक्य में रूप बदल गया और सटीक शब्द के प्रयोग से अनुवाद सहज दिखाई पड़ता है; जैसे –

1. He is a fine person. वह अच्छा/सुसंस्कृत व्यक्ति है।
2. It was a fine speech. यह सुंदर भाषण था।
3. He has to pay a fine for coming late. देर से आने की वजह से उसे जुर्माना देना पड़ेगा।

इसी प्रकार एक अन्य शब्द है Exploit जिसका प्रचलित अर्थ है 'शोषण'; जैसे–

The rich have always exploited the poor.
अमीर लोगों ने सदा गरीबों का शोषण किया है।

लेकिन एक अच्छे अर्थ में भी इसका प्रयोग किया जाता है, जैसे–

We should exploit all our resources.
हमें अपने सभी संसाधनों का पूरा–पूरा उपयोग करना चाहिए।

इसी प्रकार एक सामान्य शब्द State है जिसका सामान्य अर्थ है कहना, जबकि पारिभाषिक रूप में इसका अर्थ है राज्य, शासन, सरकार।

Balance – भौतिकी में 'तराजू', वाणिज्य में 'अधिशेष', खेल–कूद में 'संतुलन' आदि भिन्न–भिन्न अर्थ व्यक्त होते हैं।

* प्रबंधक (राजभाषा), निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

Order – 'क्रम', 'व्यवस्था', 'आदेश'–तीनों के अर्थों में प्रसंगानुसार प्रयुक्त होता है।

कुछ ऐसे शब्दों पर ध्यान दीजिए जिनका अर्थ सामान्य व्यवहार में अलग और व्यापार तथा बैंकिंग के क्षेत्र में अलग रूप से प्रयुक्त होते हैं। जैसेः–

1. Overdue
   lkekU; 0;ogkj – पुराना, कालातीत, बाकी
   0;kikj rFkk cfdx – अतिदेय, विलंबित, अतिशोध्य
2. Realisation
   lkekU; 0;ogkj – सिद्धि, कार्यान्वयन, अनुभूति
   0;kikj rFkk cfdx – उगाही, वसूली, प्रापण
3. Strong
   lkekU; 0;ogkj – तगड़ा, मज़बूत, शक्तिशाली
   0;kikj rFkk cfdx – तिजोरी, कोषकक्ष (स्टांग रूम)

उपर्युक्त शब्दों और उनके पर्याय को देखते हुए यह सिद्ध होता है कि पर्याय–निर्धारण का प्रमुख और मौलिक आधार संदर्भ है और इसका दूसरा आधार है अनुवाद भाषा की प्रकृति और प्रायोगिक स्तर। कर्तृवाच्य और कर्मवाच्य के अनुवाद में अनुवादक को काफ़ी सावधानी बरतनी होती है; जैसे –

I am obliged का अनुवाद "मैं आभारी हूं" होगा न कि "मैं आभारी कर दिया गया हूँ।

अंग्रेजी की प्रकृति मुख्यतः कर्मवाच्य की है और हिन्दी की प्रकृति मुख्यतः कर्तृवाच्य की है।

इसी प्रकार प्रत्यक्ष और परोक्ष कथन का एक उदाहरण देखें।

iR;{k dFku% He said to me, " you are late".

ijk{k dFku% He told me that I was late.

इसका हिन्दी अनुवाद यह नहीं होगा कि "उसने मुझे बताया कि मैं देर से आया था", बल्कि यह होगा "उसने मुझसे कहा कि तुम देर से आए हो"। इसलिए स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा की प्रकृति पर ध्यान देने की आवश्यकता है।

मुहावरे और कहावत प्रत्येक भाषा के अपने अभिन्न अंग होते हैं जिनका अनुवाद प्रायः नहीं हो सकता। परंतु अंग्रेज़ी के अनेक मुहावरों के अत्यंत सार्थक अनुवाद हुए हैं जो हिंदी में प्रचलित हो गए हैं। नियमतः मुहावरे का शब्दानुवाद न होकर लक्ष्य भाषा में प्रचलित समानांतर मुहावरा ही देना चाहिए। उदाहरण के लिए; To put the cart before the horse के लिए आम बोलचाल में मुहावरा है 'ब्याह पीछे सगाई'। लेकिन इस प्रकार के मुहावरे की संगति शिष्ट भाषा के साथ नहीं बैठ सकती, जबकि अंग्रेज़ी के मुहावरे के विषय में इस प्रकार की कोई बाधा नहीं है। कहावत का भी समानांतर हिंदी रूप ही दिया जा सकता है। लेकिन यहाँ भी भाषिक स्तर का ध्यान रखना आवश्यक है। जैसे – A bad worksman quarrels with his tools की समानांतर कहावत है "नाच न जाने आँगन टेढ़ा", लेकिन आम भाषा में इसका अर्थ इस प्रकार होगाः "अनाड़ी आदमी अपना दोष दूसरे के मत्थे मढ़ देता है।" अतः यदि आवश्यकता पड़े तो हिंदी की समानार्थक कहावत के बजाय शब्दानुवाद भी दिया जा सकता है।

इसी प्रकार भाषा में क्रिया पदों का प्रयोग समय बीतते–बीतते एक खास पदबंध का रूप धारण कर लेता है। ऐसे वाक्यांश के प्रत्येक अंश का विश्लेषण करके उसकी व्याख्या करना कठिन होता है या कभी–कभी असंगत भी होता है। ऐसे प्रसंग पर मूल का भाव समझकर लक्ष्य भाषा के उपयुक्त पदबंध लिखना पड़ता है।

उदाहरण के लिएः

1. Time is up.
   vuFkd vuokn – समय ऊपर है।
   lkFkd vuokn – समय हो गया है।
2. Ram Chandra passed away yesterday.
   vuFkd vuokn – रामचंद्र कल दूर चले गए।
   lkFkd vuokn – रामचंद्र का कल देहांत हो गया।

कई बार हम एक ही शब्द का प्रयोग विभिन्न प्रसंगों में, विभिन्न अर्थों में करते हैं। ऐसी स्थिति में अनुवाद और कठिन होता है; जैसे –

They work **hard** - वे कड़ी egur करते हैं।

Their work is **hard** - उनका काम dfBu है।

यहाँ अलग–अलग वाक्यों में **hard** शब्द का अर्थ अलग–अलग प्रयोग किया गया है।

यह भी देखा गया है कि कई बार जानकारी के अभाव में या शाब्दिक अनुवाद होने की स्थिति में अर्थ का अनर्थ हो जाता है; जैसे –

1. This man is an island.
   vuokn% द्वीप है यह इंसान
   lgh vuokn% मैन नामक एक छोटा–सा द्वीप है

वास्तव में man का शाब्दिक अर्थ इंसान कर दिया गया है जबकि Man 'ISLE of MAN' नामक एक द्वीप है जो ब्रिटेन और आयरलैंड के बीच स्थित है। इस वाक्य का अनुवाद करते समय अनुवादक को इसकी जानकारी न होने से अर्थ का अनर्थ हो गया है। चूँकि यह द्वीप रहस्यपूर्ण रहा है इसलिए इसे रहस्य से भरपूर द्वीप भी कहते हैं। अन्य उदाहरण भी देखिए;

2. His was a nuclear family.

vuokn% उसका नाभिकीय परिवार था।

lgh vuokn% उसका एकल (छोटा–सा) परिवार था।

3. The Govt. has failed to deliver the goods.

vuokn% सरकार माल बांटने में असमर्थ रही है।

lgh vuokn% सरकार ने जो वायदे किए थे, उन्हें वह पूरा न कर सकी।

4. I measure out my life with coffee spoons.

vuokn% मैं अपना जीवन कॉफी के चम्मचों से नापता हूं।

lgh vuokn% मैं अपने निरर्थक जीवन से ऊब गया हूं।

उपर्युक्त अनुवादों से हम देखते हैं कि कई वाक्यों में मुहावरेदार प्रयोगों या मुहावरेदार पदबंधों से अर्थ का अनर्थ हो जाता है। इसी प्रकार के सही रूपों के अन्य दृष्टांत दिए जा रहे हैं।

1. To be in rough weather – विषम कठिन परिस्थिति में
2. To face the music – परिणाम सहना, भुगतना
3. At sixes & sevens – पूरी तरह व्यवस्थित न होना
4. Tip of the iceberg – छिपी हुई किसी बड़ी समस्या का छोटा किंतु दिखाई देने वाला हिस्सा
5. To weather a crisis – किसी कठिन स्थिति से सुरक्षित बाहर निकलना
6. Razor edge fight – कड़ा मुकाबला/कड़ी टक्कर

कई बार अनुवाद इतना कठिन बन जाता है कि उसे समझने में समय लगता है। अतः अनुवादक को सरल अनुवाद करने का प्रयास करना चाहिए। जैसे –

1. As envisaged in the earlier plan periods.

dfBu vuokn% पूर्ववत योजनावधियों में यथा परिकल्पित।

ljy vuokn% जैसाकि पिछली योजना की अवधियों में सोचा गया था।

2. Delay in the work due to change of contractor.

dfBu vuokn% संविदाकर्ता के परिवर्तन के कारण कार्य में विलंब हुआ।

ljy vuokn% ठेकेदार के बदले जाने से काम में देर हुई।

कभी–कभी सांस्कृतिक दृष्टि से भी स्रोत भाषा का अनुवाद करते समय लक्ष्य भाषा में उन्हें उतार पाने में कठिनाई होती है। उदाहरण के लिए, यदि जर्मन स्रोत भाषा में 'Hen' का हिन्दी लक्ष्य भाषा में बिंबानुवाद 'मुर्गी' किया जाए तो सर्वथा अनुचित होगा क्योंकि जर्मन भाषा में यह 'कुलटा स्त्री' का वाचक है। अतः अनुवादक को दो भाषाओं का यह अंतर ध्यान में रखकर ही अनुवाद करना होगा। इसी प्रकार हिन्दी भाषा के चरणामृत, लुंगी, कलश, अक्षत इत्यादि को अंग्रेजी में अनूदित करते समय सांस्कृतिक परिदृश्यों का ध्यान रखना होगा।

एक और उदाहरण देखिए:

The Santhal women, feather tucked in their luxuriant hair, holding one another by their waist on both sides, came dancing in groups to the beat of the madol. This was intoxicating.

vuokn% संथाल जाति की महिलाएँ घने बालों में जिन्होंने पंख लगा रखे हों, कमर के दोनों ओर भी पंख सजाएं हों, मडोल की थाप पर समूह में नाच रही हों। यह मदहोश कर देता है।

lkFkd vu-% घने बालों में पंख लगाए संथाल जाति की महिलाएं एक–दूसरे की कमर में हाथ डालकर मडोल की थाप पर समूह में नाच रही थीं। यह अद्‌भुत था।

यह अनुवाद गलत तो था ही। साथ ही, शब्दों का चयन भी उचित नहीं था।

जहाँ तक साहित्यिक अनुवाद का प्रश्न है तो काव्यानुवाद करते समय कविता की मूल संवेदना की संप्रेषणीयता और व्यंग्यार्थ पर ध्यान देना आवश्यक है। साहित्यिक अनुवाद अत्यंत दुष्कर एवं जटिल कार्य है जिसके लिए असाधारण प्रतिभा, क्षमता और अभ्यास तीनों की अपेक्षा रहती है। डॉ. जार्ज केम्पबेल के अनुसार प्रत्येक भाषा में रीति–नीति, प्रेम, वासना, आवेग–स्पंदन तथा सुप्त–प्रसुप्त चेतना आदि से संबंधित बहुत–सी ऐसी शब्दावली होती है जिसका ज्यों का त्यों भाषांतर किसी दूसरी भाषा में हो ही नहीं सकता।

1. April is the cruelest month.

'kkfdnd vuokn% अप्रैल अति क्रूर माह है।

Lkgh vuokn% टीस रहे हैं वसंत के जख़्म।

2. Beauty is truth, truth beauty.

'kkfdnd vuokn% सुंदरता सत्य है, सत्य ही सुंदरता।

Lkgh vuokn% सुंदरता परम सत्य की अभिव्यक्ति है।

3. If winter comes, can spring be far behind.

'kkfdnd vuokn% यदि शीत ऋतु आती है, तो क्या वसंत ऋतु नहीं आएगी ?

Lkgh vuokn% 'सुख व दुख जीवन का शाश्वत क्रम है'।

ऐसी समस्याएँ प्रायः अनुवादक के समक्ष आती हैं कि 'winter' व 'spring' जैसे बिंबों को यथावत लक्ष्य भाषा में रखा जाए या उनका प्रतीकात्मक अर्थ ही लिया जाए। साहित्यिक अनुवाद में अनुवादक के सामने समस्या खड़ी होती है कि वह प्रसाद की पंक्ति "रो–रोकर, सिसक–सिसक कर कहता हूं करुण कहानी" का अनुवाद 'I tell my tale while weeping' करें या 'Weeping, sobbing I say my sad story of sorrow'। निश्चय ही बाद वाला अनुवाद बेहतर है क्योंकि इसमें 'सिसक'

और 'करुण–कहानी' के बिंबों को sobbing और sad story of sorrow के द्वारा लक्ष्य भाषा में सुरक्षित रखा गया है।

उपर्युक्त उदाहरणों से यह स्पष्ट है कि कविता में बिंबों का अनुवाद–कार्य मात्र एक भाषा से दूसरी भाषा में कह देने का सरल–सा कार्य नहीं है, यह एक वास्तविक रचनात्मक कार्य है। इसमें अनुवादक की समस्या बिंबगत जटिलताओं, छायाओं, संकेतों और सूक्ष्म सांगीतिक प्रभावों को स्रोत भाषा से लक्ष्य भाषा में प्रतिबिंबित करना है। शब्दशः अनुवाद करने पर शब्द अपने प्रभावों से अलग हो अपूर्ण रह जाते हैं। अतः अनुवादक द्वारा उस बिंब को उतारना अपेक्षित होता है जो वे शब्द उसमें उत्पन्न करते हों। परंतु इसमें एक संभावना यह भी बनी रहती है कि अनुवादक जिनके लिए अनुवाद कर रहा है, उनके मन में उनका अस्तित्व ही न हो। उदाहरण के लिए;

मुक्तिबोध की 'अंधेरे में' के प्रतीकात्मक बिंबों 'खोजता हूँ, पठार–पहाड़–समुंदर' का शाब्दिक अनुवाद किया जाए (I search for the sterile land mountains sea) या फिर भावानुवाद (I search for the people of low class - middle class – high class)। ऐसे स्थानों पर अनुवादक की सूक्ष्मग्राही चेतना और तीव्र प्रतिभा ही ऐसे अनुकूल शब्दों को खोजने में सफल हो सकती है जो मूल रचना की सी प्रतिक्रिया उत्पन्न करे।

वाणिज्य और व्यापार के क्षेत्र में कुछ ऐसे शब्द हैं जो सामान्य भाषा से अलग अर्थ देते हैं लेकिन वाणिज्य, व्यापार, शेयर और बाज़ार भाव के रूप में उनके लिए एक निश्चित अर्थ निर्धारित है। जैसे Bull & Bear। वाणिज्यिक साहित्य में विज्ञापनों का भी महत्त्व है। कई बार विज्ञापन के शीर्षक पंचलाइन या नारे के रूप में होते हैं और उनका सृजनात्मक अनुवाद मूल पाठ से अधिक आकर्षक और रोचक होता है। जैसे–

The bank you can bank upon.

vuFkd vuokn% एक ऐसा बैंक जिससे आप किनारा कर सकते हैं।

lkFkd vuokn% आपके भरोसे का बैंक

यहाँ अनुवाद करते समय Bank का सही भाव 'भरोसा' न देकर 'किनारा' कर दिया गया जिससे अर्थ का अनर्थ हो गया और विज्ञापन का उद्देश्य समाप्त होने के साथ–साथ बैंक की प्रतिष्ठा पर भी संदेह उठ गया; जैसे–

Think ahead-break the accident chain.

'kkfCnd vuokn% आगे सोचिए–दुर्घटना की कड़ी तोड़ें।

Hkkokuokn% दुर्घटना से देर भली।

यहाँ उपरोक्त वाक्यों का विज्ञापन के रूप में प्रयोग किया गया है। विज्ञापन का अनुवाद करते समय शब्दानुवाद न करके आकर्षक पंचलाइन के रूप में अनुवाद किया जाता है ताकि ग्राहक आपके उत्पाद की ओर आकर्षित हों।

तकनीकी विषय होने के कारण बैंकिंग के अधिकतर शब्द एक निश्चित अर्थ में प्रयुक्त होते हैं जो सामान्य बोलचाल के अर्थ से एक विशिष्ट अर्थ देते हैं; जैसे– Audit का सामान्य अर्थ 'लेखापरीक्षा' है लेकिन कभी–कभी एकदम भिन्न अर्थ में इसका प्रयोग होता है; जैसे– Audit customer – उधारी ग्राहक।

साथ ही, जिस संगठन या कंपनी का ग्राहकों से सीधा संबंध हो, वहाँ पर भी अनुवाद करते समय यह सावधानी बरतनी आवश्यक है कि जो अनुवाद किया गया है वह ग्राहकों की समझ में आसानी से आ जाए। आज वैश्वीकरण के युग में किसी भी प्रकार के यात्री या ग्राहक से सामना हो सकता है। ऐसे में प्रत्येक स्तर के यात्री या ग्राहक को ध्यान में रखते हुए अनुवाद होना चाहिए।

कार्यालयी साहित्य की भाषा और शब्दावली सर्जनात्मक साहित्य अर्थात् कविता, नाटक आदि की भाषा और शब्दावली से कई संदर्भों एवं अर्थों में भिन्न होती है। सरकारी कार्यालयों में तकनीकी और गैर–तकनीकी दोनों प्रकार की सामग्री का अनुवाद होता है। जहाँ तक संभव हो, कार्यालयी भाषा को शब्दाडंबर से भी बचाए रखना चाहिए। कई बार अनुवाद करते समय पारिभाषिक शब्दों के कई पर्यायवाची शब्द दिए जाते हैं जो बोधगम्यता में बाधा डालते हैं। उदाहरण के लिए, Sanction के लिए एक ही अंश या पत्र में 'स्वीकृति', 'संस्वीकृति' और 'मंजूरी' शब्द मिलता है और साथ ही Sanctions होने पर इसका अर्थ 'प्रतिबंध'हो जाता है। जैसेः–

1. Home Ministry has **sanctioned** two posts of Asstt. Manager for our office.
   गृह मंत्रालय ने हमारे कार्यालय के लिए सहायक प्रबंधक के दो पदों की Lohdfr दी है।
2. Financial **sanctions** have been lifted on their country.
   उनके देश पर वित्तीय ifrc/k हटा दिए गए हैं।

कई बार एक ही अनुवाद में विभिन्न शब्दों में भ्रम पैदा होने की संभावना रहती है; जैसे– Security, Safety में दोनों ही शब्दों का अर्थ 'सुरक्षा' लिखा जाता है परन्तु एक साथ आने पर Security & Safety इन्हें सुरक्षा एवं संरक्षा लिखा जा सकता है। उदाहरण देखिएः

Security and safety of the Company has been carried out by related agencies.
संबंधित एजेंसियों द्वारा कंपनी की lqj{kk ,oa lqj{kk का ध्यान रखा गया है।

इसी प्रकार नीचे कुछ वाक्य और दैनिक प्रयोग में आने वाली कुछ अभिव्यक्तियाँ दी गई हैं, जिनका हिन्दी में शाब्दिक अर्थ न लेकर भावात्मक अर्थ दिया गया है; जैसे –

1. If top companies are to get their share of the talent pool, they'll have to raise their game.

'kkfCnd vuokn% अगर बड़ी कंपनियां प्रतिभाशाली कर्मचारियों की संख्या बढ़ाने की इच्छुक हैं तो उन्हें अपनी चाल चलनी होगी।

Hkkokuokn% अगर बड़ी कंपनियां प्रतिभाशाली कर्मचारियों की संख्या बढ़ाने की इच्छुक हैं तो उन्हें इसके लिए खास तैयारी करनी होगी।

2. He has a sweet teeth.

'kkfCnd vuokn% उसके मीठे दांत हैं।

Hkkokuokn% उसे मिठाई खाने का बहुत शौक है।

3. Be careful about being too temperamental. It might land you in trouble.

'kkfCnd vuokn% अपने मनमौजी स्वभाव पर ध्यान दें। यह आपको मुश्किल में कर देगी।

Hkkokuokn% अपनी तुनकमिजाज़ी पर नियंत्रण रखें। इससे आप परेशानी में पड़ सकते हैं।

4. Couch surfing is a circle of trust among travelers and hosts. There is no pressure on either party to accept offers and both are given the freedom to decline an offer if they so feel. Besides, the fact that money is kept out of the equation helps.

'kkfCnd vuokn% काउच सर्फिंग वास्तव में पर्यटक और मेजबान के आपसी विश्वास का वृत्त है। किसी भी पक्ष पर प्रस्ताव स्वीकार करने का दबाव नहीं होता। पर्यटक और मेजबान जब चाहें प्रस्ताव निरस्त करने को स्वतंत्र होते हैं। इसके अलावा, यह भी सच है कि पर्यटक और मेजबान के आपसी विश्वास पर पैसा हावी नहीं होता।

Hkkokuokn% काउच सर्फिंग की बुनियाद वास्तव में पर्यटक और मेजबान के आपसी विश्वास पर ही टिकी है। दोनों ही पक्षों पर प्रस्ताव स्वीकार करने का दबाव नहीं होता। पर्यटक और मेजबान को इसे न मानने की भी आज़ादी होती है और इस सबमें पैसा जुड़ा न होने के कारण आसानी भी रहती है।

अतः अनुवादक को अनुवाद संबंधी व्यावहारिक समस्याओं को दूर करने के लिए देश, काल, साहित्य, तकनीकी आदि को ध्यान में रखते हुए सही शब्दों या अर्थों का चयन कर अनुवाद करना चाहिए। शब्दों में एकरूपता बनाए रखी जानी चाहिए तथा अनुवाद को सरल बनाने का प्रयास करना चाहिए जिससे अनुवाद अधिक सुबोध और स्पष्ट होगा। उत्तम अनुवाद की अनिवार्य शर्त यह है कि उसमें मूल पाठ का यथार्थ बोध कराने की अर्थात उसका सही–सही अर्थ व्यक्त करने की क्षमता होनी चाहिए। उसमें स्पष्टता और भाषिक स्वच्छता होनी चाहिए यानि वाक्य–रचना में उलझाव नहीं होना चाहिए। साथ ही भाषा सुवाच्य, स्पष्ट और प्रवाहमयी होनी चाहिए।

खुशियों के प्यार भरे फूल

*शेर जगजीत सिंह

एक छोटा सा प्रश्न है कि खुशी हमें कहां से मिलती है? लगभग सभी यही कहेंगे कि प्यार में। यही बात दोबारा इस प्रकार पूछी जाए कि प्यार देने से हमें क्या मिलता है? लगभग फिर सभी का यही उत्तर होगा कि खुशी मिलती है। इस प्रकार देखा जाए तो खुशी व प्यार एक–दूसरे के पूरक हैं। चंद शब्दों के द्वारा आपके सामने यह भाव प्रस्तुत हैं–

प्यार–

प्यार देता मन को सुखद अहसास है,
प्यार से जिदंगी बन जाती खास है।

प्यार के अहसास को जगाए रखिए,
प्यार से तन–मन को महकाये रखिए।

प्यार बिना जिंदगी लगती अधूरी है,
प्यार मिटा दे, दो दिलों की दूरी है।

प्यार ही अशांति मिटा, शांति दिला सके,
संसार में खुशियों के फूल खिला सके।

प्यार में महान शक्ति और अद्भुत बल
प्यार मनुष्य के जीवन को देता बदल।

प्यार की राह पर कदम बढ़ाते चलिए
हृदय से सबको अपने लगाते चलिए।

प्यार में छिपी होती एक अनुपम हैं गंध
प्यार, जिंदगी भर का एक सुखद है अनुबंध।

इसलिये आपने देखा प्यार को आप जहां भी फैलाएंगे उसका प्रभाव भी प्यार भरा ही होगा। आइये एक प्रण प्यार भरा लें, हम भी इस प्यार को बांटने में भागीदार बनें, जिससे एक मजबूत नींव का आधार बने, जिसका नाम प्यार हो।

* उप महाप्रबंधक (पी.सी.एस.), निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

हिन्दी का महत्व

*दयानिधी अग्रवाल

भारत की राष्ट्रभाषा हिन्दी है लेकिन ये विडम्बना है कि हिन्दी आज अंग्रेजी की बैसाखी पर है। प्रायः अखबारों में देखा गया है कि विदेशों में हिन्दी में भाषण देकर अत्यंत प्रशंसनीय समाचार को जगह मिलती है, जबकि इसकी पृष्ठभूमि में जाएं तो यह हमारा कर्तव्य भी है। इस मामले में विदेशी लोगों को अंग्रेजी भले ही न आये लेकिन वे अपने विचार द्विभाषियों के जरिये रखते हैं। उन्हें किसी अन्य भाषा की आवश्यकता नहीं होती। आज दूरदर्शन पर व्यावसायिक चैनल हिन्दी के हैं और अत्यधिक मात्रा में हिन्दी के माध्यम से लाभ प्राप्त कर रहे हैं। हिन्दी में कामकाज के लिए राज्यों को वर्गों के अनुसार बांटा गया है ताकि कार्य करने में सुगमता हो सके। आज सारे राष्ट्र को हिन्दी में ही समाहित किया जाना चाहिए। जो राज्य हिन्दी भाषी नहीं हैं वहाँ भी हिन्दी का प्रचलन है।

हमारे बॉलीवुड को ही लीजिए। नायक–नायिकाएं हिन्दी के बलबूते पर प्रसिद्धि प्राप्त कर रहे हैं। वे भले ही प्रत्येक कार्यक्रमों में अंग्रेजी बोलने का ढोंग पाले रहते हैं लेकिन सहारा हिन्दी का ही लेते हैं। जिन्हें अंग्रेजी नहीं आती वह भी हिन्दी–अंग्रेजी को मिला कर खिचड़ी भाषा बोलते हैं। आज अंग्रेजी की वजह से ही ऐसी भाषा का निर्माण हुआ है, लेकिन हिन्दी भाषा के कारण ही हिन्दी फिल्में चलती हैं। अंग्रेजी फिल्मों को चुनिंदा क्षेत्रों में देखा जाता है। टायटेनिक फिल्म को जैसा फिल्माया गया है, अत्यंत उम्दा है। पहली बार जब उस फिल्म को देखा गया तो लोग उसकी प्रशंसा करते रहे। अंग्रेजी भाषा के कारण इस फिल्म को देखने वालो की संख्या कम थी लेकिन जैसे ही इसे हिन्दी में डब किया गया इसको देखने वालों की संख्या तेजी से बढ़ गयी। भारत में शायद ही ऐसा कोई व्यक्ति होगा जिसने यह फिल्म न देखी हो।

विवेकानंद जी ने शिकागो में हिन्दी में जो विचार रखे आज भी प्रशंसनीय हैं। इसे जनसाधारण जानता है फिर हम क्यों अंग्रेजी के पीछे भागें। जैसे परिवार में एक साथ भोजन करते हैं, वैसा ही हिन्दी को परिवार मानकर उसे महत्ता दें तो अंग्रेजी को मिटाया जा सकता है। अंग्रेजी के हिमायती लोग हिन्दी को क्लिष्ट मानकर विवाद पैदा करने से नहीं चूकते। जैसे वे रेल को लौह पथगामनी कहते हैं लेकिन इतना समझने की कोशिश नहीं करते कि इसे आम बोलचाल की भाषा में रेल क्यों न कहा जाए।

सूचना प्रौद्योगिकी के इस युग में हिन्दी का अपना महत्व बढ़ता जा रहा है। कंप्यूटरीकरण के क्षेत्र में भी हिन्दी ने अपना महत्वपूर्ण स्थान बनाया है। यह भाषा निरंतर गति प्रदान कर रही है, जिसके कारण आज हिन्दी विश्व पटल पर भी गौरवशाली स्थान प्राप्त कर रही है।

आइये, हम सब मिलकर संकल्प लें कि अंग्रेजी की गुलामी से मुक्ति पायें और हिन्दी को अधिक से अधिक अपनाकर, उसको गौरवशाली स्थान देकर देश का सम्मान करें।

* वेअरहाउस सहायक–।, सैन्ट्रल वेअरहाउस, रायपुर, छत्तीसगढ़

रिटायरमेंट का ख्याल

*प्रताप नरायण गर्ग

एक दिन अचानक, उनसठ साल के बाद,
नौकरी से रिटायरमेंट का आया ख्याल,
दिल ने किया, अपने आपसे एक सवाल।

कैसे कटेंगे, रिटायरमेंट के बाद के बाकी साल,
दिल के अन्दर से फिर, आई ये आवाज़,
क्यों चिन्ता करते हो, मेरे जांबाज़।

दिल ने फिर कहा, तुम्हारी नौकरी का सिर्फ,
बदल रहा है टायर,
तुम अभी नौकरी से, नहीं हुए रिटायर।

आदमी अनन्तकाल, से ही है, सेवादार
कभी समाज व गृहस्थ का और कभी ईश्वर का,
इसलिए अब बाकी के दिनों में करो,
ईश्वर, गृहस्थ व समाज की सेवा,
तभी होगा, तुम्हारे जीवन का उद्धार।

* सहायक महाप्रबन्धक (वित्त), निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

विचारों की दुनिया

*प्रकाश चन्द्र मैठाणी

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी होने के साथ–साथ विचारशील प्राणी भी है। हर वक्त कुछ न कुछ सोचता ही रहता है। कोई न कोई भावना, विचार उसके मस्तिष्क पटल पर हर समय आते रहते हैं। इस प्रकार हमारी कल्पना, हमारी सोच ही तो हमारे विचार हैं। प्रायः एक व्यक्ति के मन में एक दिन में कई हजार विचार आते हैं। ये विचार अच्छे और बुरे दोनों हो सकते हैं। हमारे मन में आने वाले विचार ही सबसे अधिक हमारे जीवन को प्रभावित करते हैं। कभी–कभी अक्षमता, निराशा के विचार आने पर मन नकारात्मक ध्वनि देने लगता है और मानव अपने को अक्षम समझ कर नकारात्मक सोचने लगता है। विचारों का प्रभाव बहुत तीव्र होता है। विचार केवल पास के लोगों को ही प्रभावित नहीं करते बल्कि दूर बैठे व्यक्ति पर भी प्रभाव डालते हैं। जिस वस्तु, व्यक्ति और स्थान से जुड़े विचार होंगे वे उस वस्तु, व्यक्ति को जरूर प्रभावित करते हैं। किसी महान पुरुष या संत के पास बैठ कर मन को असीम शान्ति मिलती है, मन को अच्छा महसूस होता है, शान्ति मिलती है, आनन्द मिलता है। इसका केवल एक ही कारण है कि उनकी सकारात्मक सोच हमें प्रभावित करती है। उस समय हमारे सकारात्मक विचार ऊपर आ जाते हैं और हम आनन्द का अनुभव करने लगते हैं।

अब प्रश्न है कि सकारात्मक विचारों को कैसे लाया जाय? यह एक कला है। हमेशा मनुष्य को अपने विचारों का निरीक्षण करना चाहिए। फालतू और नकारात्मक विचारों को छोड़ते रहना चाहिए। जब हम फल या सब्जी खरीदते हैं तो गले–सड़े फलों को छोड़कर अच्छे फल

या सब्जी टोकरी में डाल कर ले लेते हैं, ठीक ऐसे ही जगत व्यवहार में हमें केवल सकारात्मक विचारों को ग्रहण करना चाहिए। घर पर एक–दो दिन में जो फल थोड़ा खराब होने लगते हैं हम उन्हें भी फेंक देते हैं। यदि ऐसा व्यवहार हम अपने विचारों के साथ भी करेंगे तो हमारे विचार अपने आप ही अच्छे हो जाएंगे। माली जैसे एक गुलाब की क्यारी में फालतू लगे पौधों को जड़ से उखाड़ कर बाहर फेंक देता है ताकि गुलाब के पौधों को भूमि की पूरी उर्वरा शक्ति मिल सके और उगे हुए गुलाब के पौधे अच्छी तरह से विकसित हो सकें। ऐसे ही हमें भी समय–समय पर फालतू और नकारात्मक विचारों को एक–एक कर नष्ट कर देना चाहिए, ताकि हमारी पूरी शक्ति अच्छे कामों में लगे और हमारे जीवन की क्यारी सुन्दर एवं विकसित हो सके।

आज का हमारा जीवन भूतकाल के विचारों का परिणाम है और आज के विचारों के अनुरूप हमारा भविष्य बनने वाला है। यदि वर्तमान जीवन में अच्छे विचार हैं भविष्य अवश्य ही उज्ज्वल होगा। प्रारब्ध क्या है? हमारे पूर्व जन्मों के विचार और उनके अनुरूप किये गये कर्म। मनुष्य अपने भाग्य का स्वयं निर्माता है। किसी कवि ने बहुत ही सुन्दर शब्दों में कहा है–

nuu oky u j[kh dlj dN ugh]
iku oky u vxj ik;k dN ugh]
rj gkFkk e n nh g lUnj dye]
HkkX; r fy[k u ik, rk og D;k dj

विचारों को आस–पास का वातावरण भी प्रभावित करता है। हमारी जीवन शैली भी प्रभावित करती है। जैसा हम भोजन करते हैं, जैसा हम साहित्य पढ़ते हैं एवं जैसी हमारी संगति होती है– इन तीन बातों से हमारे विचार प्रभावित होते हैं। इसीलिए कहा गया है– tlk [kkvkx vUu] olk cuxk euA हमारे धार्मिक ग्रंथों में भोजन पर विशेष महत्व दिया गया है। महाभारत में एक प्रसंग आता है कि भीष्म पितामह अपनी प्रतिज्ञा अनुसार लड़ तो रहे थे कौरवों की ओर से परन्तु उनका पूरा ध्यान रहता था पाडवों पर। दुर्योधन इससे बहुत चिन्तित हुए, उन्होंने युधिष्ठर के पास जा कर पूछा कि भीष्म पितामह ऐसा क्यों कर रहे हैं। युधिष्ठर ने सत्य बात कह दी कि इनको किसी नीच व्यक्ति के घर का

* सहायक प्रबंधक (राजभाषा), निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

भोजन खिलाया जाए ताकि इनकी बुद्धि भ्रष्ट हो जाए और इन्हें सत्य–असत्य, अच्छे–बुरे का ज्ञान ही न रहे तब वे कौरवों की ओर से लड़ सकते हैं। दुर्योधन ने पूछा कि किस नीच व्यक्ति के घर का भोजन मंगाया जाए, इस पर युधिष्ठर ने पुनः सत्य बात कह दी कि भाई तुमसे नीच और कौन हो सकता है। दुर्योधन ने वैसा ही किया और भीष्म पितामह ने पांडवों पर प्रहार करना शुरू कर दिया।

अन्न का प्रभाव हमारे विचारों पर बहुत जल्दी पड़ता है। इसी प्रकार साहित्य का भी मनुष्य के विचारों पर प्रभाव पड़ता है। यदि मनुष्य रामायण, गीता, कुरान, बाइबिल, गुरुग्रंथ साहब आदि धार्मिक ग्रंथों का अध्ययन करता है तो उसके विचारों में उसी के अनुसार अच्छे विचारों का समावेश होने लगता है। यदि व्यक्ति फिल्मी पुस्तकों को पढ़ता है तो उसके जीवन में उसी प्रकार के विचारों का असर अधिक रूप में पाया जाता है। जैसी संगति मनुष्य की होती है उसका असर भी मानव पर अवश्य ही पड़ता है। जैसा कि कबीरदास जी ने भी कहा है– ^dchjk lxr lkèk dh cfx djh tk,] nefr nj xok; lk nlh lefr crk;A* अतः सत्साहित्य, स्वच्छ भावनाओं से बनाया अन्न और सतसंगति में मनुष्य के विचारों, जीवन को बदलने की शक्ति है।

इस प्रकार यदि हम कुछ बातों को ध्यान में रखें तो जीवन सुखद बन सकता है। जिस वक्त हम एक विचार कर रहे हों तो दूसरे विचार को मन में न आने दें। यदि पढ़ने बैठें तो चाय या क्रिकेट की बात ना सोचें। दफ्तर या कार्यस्थल पर जा कर घर की बात न सोचें। इससे हमारी कार्यक्षमता बढ़ती है। नेपोलियन की सफलता का रहस्य भी यही था कि वह अपने विचारों को इस तरह वश में रखता था कि उसने जब नींद का विचार कर लिया तो वह अन्य किसी भी विचार को अंदर नहीं आने देता था। इससे एक कार्य को पूरी शक्ति मिल जाती है और कार्य में सफलता ही सफलता हाथ लगती है। प्रत्येक व्यक्ति की अपनी एक मुखाकृति होती है। अपना एक रंग–रूप होता है। इतनी बड़ी दुनिया में किसी की शक्ल किसी दूसरे व्यक्ति से नहीं मिलती। ठीक इसी प्रकार किसी एक व्यक्ति के विचार भी दूसरे व्यक्ति से नहीं मिलते, चाहे दोनों भाई–बहन हों या पिता–पुत्र हों। हम सभी के नाक, कान, मुंह, आंखें हैं परन्तु किसी से मेल नहीं खाती। सभी के अंगों की आकृति भिन्न–भिन्न है। ठीक इसी प्रकार सभी की सोच और विचार करने का ढंग भी अलग–अलग है। परिणाम स्वरूप प्राय मित्रों में, भाईयों में, पिता–पुत्र में अनायास ही मतभेद हो जाता है। एक क्षण भर में ही मित्रता शत्रुता में बदल जाती है। रिश्तों में दरार पड़ जाती है। अतः हमें सदैव एक–दूसरे के विचारों को समझने की कोशिश करनी चाहिए ताकि अपने सगे संबंधियों के साथ हमारे रिश्ते मज़बूत बने रहे और हम सभी तनाव व संघर्ष से बच सकें। कौन हमारा शत्रु है, कौन मित्र उसमें क्या गुण और क्या दोष हैं, ये सब हमारे मन में समाया हुआ है। प्रत्येक व्यक्ति अपनी कल्पना शक्ति से अपने सुख–दुख की दुनिया बना लेता है। शेक्सपियर ने ठीक ही कहा है कि ''कुछ भी अच्छा या बुरा नहीं होता बल्कि हमारा दृष्टिकोण ही वैसा बना देता है।'' किसी व्यक्ति को आप अपना सच्चा मित्र मान कर विचार कीजिए तो उसके सभी गुण आपके सामने आने लगेंगे। उसी को अपना शत्रु मान कर विचार कीजिए तो मन आपको यही प्रमाणित कर देगा कि वह व्यक्ति आपका शत्रु ही है। स्वतः ही उसकी सभी बुराईयाँ आपको दिखाई देने लगेंगी। ^;Fkk nf"V] rFkk lf"V* दिखाई देगी।

यदि आप अपने मन में सभी के प्रति मित्र भाव रख कर सभी के गुणों को देखेंगे, उनसे प्रेम करेंगे तो उनके प्रति आपके मन में अनुराग पैदा होगा। आप उनसे प्रेम करने लगेंगे। वे आपको प्रिय लगने लगेंगे। वे आपके अपने हो जाएंगे। आप आनन्दमय हो जाएंगे। आपकी सारी परिस्थितियां अनुकूल हो जाएंगी। आप सुखी हो जाएंगे। आपको चारों ओर प्रसन्नता ही प्रसन्नता दिखाई देगी। आप धन्य हो जाएंगे। आप कल्पना लोक में खो जाएंगे। विचार मग्न हो जाएंगे। पूर्ण आनन्द पा जाएंगे। यह है विचारों की दुनिया।

★ आदमी काम से नहीं बल्कि उसे भार समझने के कारण थकता है।
★ भूत से प्रेरणा लेकर वर्तमान में भविष्य का चिंतन करना चाहिए।

हिन्दी से जुड़ी पौराणिक कथा

*विजयपाल सिंह

हमारे पुराणों में भगवान शिव एवं भगवती सती की बड़ी मार्मिक कहानी का वर्णन है। सती दक्ष प्रजापति की पुत्री थी जिसका वरण देवादिदेव शिव ने किया था। सती के मन में माता–पिता से मिलने की उत्कंठा थी। पिता के घर यज्ञ की जानकारी मिलने पर वह भगवान शिव से पीहर जाने की आज्ञा मांगने लगीं। शिव सर्वज्ञ थे, उन्हें परिणाम की जानकारी थी, वे सती को रोक नहीं पाए। हां, उन्होंने यह जरूर समझा दिया कि जहां प्रेम से न बुलाया जाए, वहां नहीं जाना चाहिए। सती शिव की बिना आज्ञा के वहां चली गईं, लेकिन वहां जाकर उन्हें अपनी भूल का एहसास हुआ। पिता और बहिनों के उलहना भरे स्वर एवं तानों को सुनकर उनका दिल टूट गया। फिर भी माता की ममता एवं वात्सल्य के कारण वह उस अपमान को पी गईं। यज्ञ में सभी देवी–देवताओं के अलग–अलग हिस्से रखे हुए थे लेकिन शिव का स्थान यहां भी खाली था। जब पिता से सती ने इसका कारण पूछा तो वह बोले जो गले में नाग डालकर कैलाश में नंग–धड़ंग धूनी रमाये बैठा है वह कैसा देवता है? यह तो मेरा दुर्भाग्य है कि जो मैंने उस भिखारी से तेरा वरण किया। सती के लिए यह सब असह्य था। चराचर विश्व के स्वामी देवादिदेव के प्रति ऐसे कठोर बचन सुनकर वह भरे मन से यज्ञ की वेदी पर कूद पड़ीं और उसका अंग–अंग यज्ञ की ज्वाला से झुलस गया और उनके प्राण–पखेरू उड़ गए। शिव तो ध्यान में यह सब देख रहे थे। उन्होंने अपना तीसरा नेत्र खोला और अगले ही क्षण दक्ष प्रजापति की यज्ञ–स्थली पहुंच गए। उसके सारे साम्राज्य का विनाश कर उन्होंने मृत सती को अपने कंधे पर उठाया और शोकमग्न से घूमने लगे। सारी धरती कांप उठी। विष्णु ने उन्हें शांत करने के लिए चक्र उठाया और सती के शरीर के 51 टुकड़े कर दिए। जहां–जहां वह टुकड़ा गिरा वहीं सिद्धपीठ बन गया। कहा जाता है कि इसी को आधार मानकर देवनागरी वर्णमाला में प्रत्येक वर्ण को सिद्ध मानते हुए 51 वर्णों की सृजना की गई ताकि इस तपोभूमि भारत की भाषा परम पुनीत बनी रहे।

शब्द को ब्रह्म मानने वाले ऐसे पुनीत राष्ट्र और ऐसी राजभाषा के प्रति समर्पण और निष्ठा की भावना होना हम सभी का पावन कर्त्तव्य है जिसके बिना न तो कोई राष्ट्र उन्नति कर सकता है और न ही उसका अस्तित्व कायम रह सकता है। शिव–पार्वती, राधा–कृष्ण एवं सीता–राम की इस पावन भूमि के हम सदियों से गीत गाते रहे हैं। हमने इस राष्ट्र के कण–कण में भगवान के साक्षात दर्शन किए हैं। इस दर्शन में शस्य श्यामला भारत माता के प्रति हमारी श्रद्धा एवं निष्ठा परिलक्षित होती है। इसके हिमालय, इसकी विशाल धरा एवं विस्तृत नदियों में हमने सदैव ही एकता के दर्शन किए हैं जिसका चित्रण श्लोकों में दिखाई देता है।

हमारी राजभाषा ही एक ऐसा माध्यम है जो राष्ट्र की भावनात्मक एकता के लिए उत्तरदायी है, लेकिन सदियों की गुलामी के कारण हमारा गौरवशाली इतिहास अंग्रेजों एवं अंग्रेजियत का ही अतीत बन कर रह गया है। इसी कारण आजादी के 63 वर्षों के बाद भी हमारी शिक्षा प्रणाली अंग्रेजी पर आधारित है। सरकारी कार्यालयों में रखी गई महत्वपूर्ण रिपोर्टें, फाइलें, नियम एवं अधिनियम अंग्रेजी के दस्तावेज़ बन कर रह गए हैं। कामकाज का समस्त ढांचा, अवसंरचना एवं भाषायी विन्यास अभी तक अंग्रेजी का ही चलता रहा है जिसका अनुवाद ही किया जा रहा है। बड़ी–बड़ी प्रतियोगिताओं में चयन का आधार अंग्रेजी ही चल रहा है। इसलिए आजादी के बाद अंग्रेजी स्कूलों की बाढ़–सी आ गयी है और हर व्यक्ति अपने बच्चों को अंग्रेजी पढ़ाने का दिवास्वपन देखता आ रहा है। हिन्दी के कामकाज के लिए तैनात हिन्दी अधिकारी और अनुवादक अंग्रेजी के आधार पर ही रखे जा रहे हैं। अस्तु अंग्रेजी को तिलांजलि दे पाना आसान नहीं है क्योंकि यह सभी को ज्ञात है कि केवल राजभाषा में महारत हासिल कर कोई भी व्यक्ति ऊँचे पद पर नहीं बैठ सकता। यह भी भली–भांति जानते हैं कि सही–सही रटी–रटाई शब्दावली और 100–200 वाक्यों से काम चलाने वाले बाबू लोग अपने बच्चों को मारपीट कर भी अंग्रेजी पढ़ाना चाहते हैं ताकि कम से कम वे उनकी तरह बाबू तो बन जाएं और ऐसा

* कनिष्ठ अधीक्षक, निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

कहना काफी हद तक ठीक भी है। अतः अभी तक भी इस देश में अंग्रेजी छोड़कर हिन्दी पढ़ने की सलाह देना न तो व्यावहारिक ही है, न ही तर्कसंगत। आज की हमारी समस्या अंग्रेजी के ज्ञान के साथ उसकी तुलना में हिन्दी को महत्व प्रदान करने की है जो हमारी राजभाषा है।

अब समय आ गया है कि जब हमें अंग्रेजी की तुलना में हिन्दी को महत्व देना होगा क्योंकि अनेकता में एकता का मार्ग यही भाषा प्रशस्त करती है। अंग्रेजी की आड़ में हम भले कुछ ऊँचा ओहदा प्राप्त कर लें लेकिन देश प्रेम के अभाव में यह सब बेकार है। आने वाले समय में परिस्थितियां ही बताएंगी कि स्वदेश एवं स्वभाषा प्रेम की मानसिकता कब तक इस तथाकथित अभिजात्य वर्ग में उत्पन्न होगी। जिस दिन ऐसा होगा एक क्रांति सी उठेगी और अंग्रेजी को जड़ से उखाड़ कर उसे अन्य विदेशी भाषाओं की श्रेणी में ही लाकर खड़ा कर दिया जाएगा।

मंत्र की महिमा

*मोहिनी मल्होत्रा

हरे राम हरे रामा, जपते थे हनुमाना,
इस मंत्र की महिमा को– सारे जग ने जाना,
हरे राम हरे रामा जपते थे हनुमाना,
इस मंत्र की महिमा को सारे जग ने जाना।

इस मंत्र से हनुमत ने सागर को पार किया,
उस राजा रावण की लंका को उजाड़ दिया,
हरे राम हरे रामा, जपते थे हनुमाना–
इस मंत्र की महिमा को सारे जग ने जाना।

इस मंत्र की महिमा को शबरी ने जान लिया,
प्रभुवर खुद घर आए, इतना सम्मान दिया,
हरे राम हरे रामा, जपते थे हनुमाना–
इस मंत्र की महिमा को सारे जग ने जाना।

जब भक्त विभीषण ने इस मंत्र का जाप किया–
प्रभुवर के प्यारे बने, लंका पर राज किया,
हरे राम हरे रामा, जपते थे हनुमाना,
इस मंत्र की महिमा को सारे जग ने जाना।

इस मंत्र से हार गया रावण सा बलशाली–2,
इस मंत्र से तुलसी ने रामायण लिख डाली,
हरे राम हरे रामा जपते थे हनुमाना–
इस मंत्र की महिमा को सारे जग ने जाना।

जब केवट ने मुख से इस मंत्र के बोल पढ़े,
भक्तों खुद रघुवर ही, केवट की नाव चढ़े–2,
हरे राम हरे रामा जपते थे हनुमाना–
इस मंत्र की महिमा को सारे जग ने जाना।

* वरिष्ठ निजी सहायक, निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

प्रभु की शरण

*नीलम खुराना

मुझको मिली हैं खुशियां, चरणों में तेरे आके।
कई जन्म हैं गंवाये, तेरे नाम को भुलाके।।

मुझको पनाह जो बख़्शी, ये तेरा शुक्रिया है,
जग बन्धनों से मुझको, आज़ाद कर दिया है,
जन्मों–जन्म रहूंगा, तेरा गुलाम बनके।
कई जन्म हैं गंवाये, तेरे नाम को भुलाके।।

जब से है डाली तूने, रहमो–करम की दृष्टि,
जीने का ढंग आया, सुरति की धारा बदली,
तेरी दयालुता पे दाता, मैं लाखों बार सदके।
कई जन्म हैं गंवाये, तेरे नाम को भुलाके।।

दिल के आइने में, बस जाये तेरा रूप,
सब कालिमा मिटा दो, हो जाये नूरो–नूर,
यह चाहना है दाता, इक मेरे दिल में कब से।
कई जन्म हैं गंवाये, तेरे नाम को भुलाके।।

कुरबत में तेरी बीते, ये मेरी ज़िन्दगानी,
इस दासी पर हमेशा, करना जी मेहरबानी,
साये तले ही रखना, अपना मुझे बनाके।
कई जन्म हैं गंवाये, तेरे नाम को भुलाके।।

* वरिष्ठ निजी सहायक, निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

अपने अपने काश

*मीनाक्षी गंभीर

मित्रों, अभी कुछ दिन पहले मुझे उपरोक्त चित्र एस.एम.एस द्वारा प्राप्त हुआ था। हालाँकि भेजने वाले ने मुझे यह चित्र व्यंग्य के तौर पर भेजा था परन्तु मुझे सोचने पर विवश कर दिया।

lc dN gkfly ugh gkrk
ftUnxh e ;gk
fdlh dk **dk'k**
rk fdlh dk **vxj** NV gh tkrk g

इतनी बड़ी दुनिया, ढेर सारे लोग, ढेर सारी बातें, किसी के अपने मलाल तो किसी के अपने फ़साने, किसी को वक़्त गुजर जाने का गम तो किसी को वक़्त पर सही कदम न उठाने का दुःख। किसी को समय रहते अपने कार्य पर ध्यान न देने का अफ़सोस, तो कोई वक़्त की कदर न कर पाने के कारण आज दुखी है। बेतरतीब–सी कई सौ ख्वाहिशें हैं। वाजिब – गैरवाजिब कई सौ सवाल हैं ''काश! ऐसा होता... काश! वैसा होता... काश! मुझे यह मिल जाता... काश! बारिश होकर मौसम सुहावना हो जाए... काश! बारिश रुक जाए तो कपड़े सूख जाएँ..। ''काश'' मैं भी इतना सफल होता,' काश! मै भी इतना रईस होता,' काश... हमारे अनुरूप ही चलती ज़िन्दगी, काश... हम चाहते और बदल जाता मौसम, काश... कोई हर क्षण पास होता आंसू चुनने को, जब कभी आँखें नम होती – इन सभी पंक्तियों से हमें कई प्रकार की अभिव्यक्तिओं का बोध होता है। हमारे मन में अभिलाषा प्रतिबिंबित करने वाला यह शब्द ज़रूर आता है– dk'k!

इंसान का जीवन हर पल ''काश'' की अंतहीन सूची से भरा पड़ा है। ''काश'' एक ऐसी मृगतृष्णा का नाम है, जो इंसान को पूरे जीवन अतृप्त और निराधार इच्छाओं के रेगिस्तान में भटकाती रहती है। जहाँ इंसान को दुःखों और निराशा के सिवाय कुछ हाथ नहीं आता और उसका पूरा जीवन यूँ ही व्यर्थ चला जाता है। जब हम अपने जीवन को वह जैसा है, वैसा नहीं स्वीकारते तब हम ''काश!'' की डूबती किश्ती में सवार होकर स्वयं को दुःख, निराशा के भँवर में डुबो लेते हैं। इस एक– ^^dk'k** से ही मनुष्य के भाव, उसकी आकांक्षाएं, उसका शोक, उसका आह्लाद, उसके गुण, उसका व्यक्तित्व तथा उसकी प्रवृत्ति दर्पण–सी स्पष्ट हो जाती है।

हर किसी के पास इस ''काश'' को हकीकत में परिवर्तित करने की काबिलियत होती है। मगर फिर भी जोश, उत्साह, सकारात्मकता, दृढ़निश्चय, परिश्रम आदि की कमी होने के कारण यह ''काश'' कइयों के लिए सर्वथा ''काश'' ही बन कर रह जाता है।

आईने में अपनी ढलती उम्र को देख–देख रोना, सफेदी को डाई की कालिमा से भिगोना और न चाहते हुए भी समय से पूर्व भगवान की भक्ति में खोना, भला कौन चाहेगा? लेकिन ढलती उम्र के इस कड़वे सच को नकारना भी तो इतना आसान नहीं है। तभी तो न चाहते हुए भी हमारे मुँह से अनायास निकल ही जाता है कि काश मेरी उम्र 5–6 साल कम हो जाए। सपने संजोना हम सभी को अच्छा लगता है। जिसका एकमात्र कारण वास्तविकता से परे काल्पनिक जगत में हिलोरे लेती हमारे सपनों की नैया है। जो आज कल वाकई में राम भरोसे ही चल रही है। भगवान से हमारी डिमांड

* वरिष्ठ निजी सहायक, निदेशक (कार्मिक) कार्यालय, निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

भी समय और वक्त देखकर बदलती रहती है। कँवारेपन में अच्छे खूबसूरत जीवनसाथी की चाह, भगवान को अपनी पसंद बताकर सिफारिश के रूप में लगे हाथ दान–दक्षिणा के साथ उनके दर पर अपनी माँग पूरी करने की अर्जी भी हम लगा ही आते हैं। पूजा–पाठ के साथ भगवान को रिझाने के लिए कभी लड्डू तो कभी नारियल भी चढ़ाना ही पड़ता हैं क्योंकि बगैर रिश्वत दिए तो धरती पर ही हमारे प्रयोजनों की दाल नहीं गलती तो ऊपर आसमान में विराजने वाले भगवान के लिए भी रिश्वत का होना लाजिमी ही है। यहाँ तक तो ठीक है लेकिन हमारे आदेश देने पर भी जब भगवान हमारा काम नहीं करते। तब उन्हें खरी–खोटी सुनाने और अपने लड्डूओं और नारियल की कीमत गिनाने में भी हम पीछे नहीं हटते। खैर, हो भी क्यों न इस व्यस्ततम जिंदगी में हमने अपने धन के साथ–साथ अपना कीमती वक्त जो भगवान को दिया होता है।

यह तो हुई भगवान की बात। अब हम बात करते हैं इंसान की। किसी के जिंदगी में देरी से मिलने पर भी हम अपनी किस्मत और भगवान के साथ–साथ उस बेचारे इंसान को भी यह कहकर कोसना शुरू कर देते हैं– ''काश'' कि वह मुझे 5–6 साल पहले मिली होती तो आज वह मेरी होती।' यह बात हम केवल लड़की के संबंध में ही नहीं कहते बल्कि नौकरी और करियर के बारे में भी अक्सर हम यहीं डायलॉग मारते हैं कि ''काश'' मेरे माँ–बाप मुझे बाहर जाने को हाँ कह देते या काश उस वक्त मैं फला इंसान की बात मान लेता तो आज वह नौकरी मेरी होती।' कभी–कभी ऐसे लोग मिलते हैं जो कहते हैं कि ''काश'' हमने बचपन में अच्छी पढ़ाई कर ली होती तो आज हम अच्छी–खासी नौकरी कर रहे होते।'' किसी से आपने सुना होगा कि ''काश'' उस समय मैं उस नौकरी को ज्वाइन कर लेता तो आज मेरी जिन्दगी ठाट से गुजरती।'' कभी–कभी कई लोग कहते हैं कि ''काश'' यदि मैं उस ज़माने में अपने बिज़नेस पर ध्यान देता तो आज मैं एक अमीर व्यक्ति होता।'' आखिर कब तक आज इसको, तो कल किसी और को कोसने का यह सिलसिला चलता रहेगा? जीवन में संतोष की तलाश कब तक जारी रहेगी? शायद तब तक जब तक हम स्वयं अपनी काबिलियत को नहीं पहचानेंगे और वर्तमान में जो कुछ हमारे पास है उसमें खुश रहना नहीं सीखेंगे। यदि हमनें वास्तविकता को अपना लिया तो शायद हमारा कल्याण हो जाएगा। जो सच है उसे स्वीकारो। यहाँ मुझे एक फिल्म चलते–चलते का डायलॉग याद आ रहा है जिसमे शाहरुख रानी मुखर्जी का पीछा करते–करते एथेंस पहुंच जाते हैं। रानी उनसे पूछती है कि ''तुम जानते हो कि मैं तुमसे शादी नहीं कर सकती। फिर भी तुम यहां क्यों आए हो?'' शाहरुख जवाब देता है 'मैं बाद में यह सोचना नहीं चाहता कि काश, मैंने ऐसा किया होता।'

काश ऐसा होता...... यही शब्द कभी–कभी बहुत कुछ कह जाता है और ज़िन्दगी चलती रहती है इसी काश के आस–पास। किसी के द्वारा लिखी गई कुछ पंक्तियाँ याद आ रही हैं, जिन्हें चलते–चलते आप सब के साथ साझा करना चाहती हूँ :

dk'k---- ;s dk'k uk gksrk--
,slk dksbZ vYQkt+ uk gksrk
lp gksrs lius lkjs
dk'k---- ;s dk'k uk gksrk

lp gksrs liuss lkjs
v/kjs liuksa dk dksbZ jkt+ uk gksrk

le; ;w gkFk ls uk fudyrk
jsr&lk uk fQlyrk
dj ysrs lc dqN tks pkgk
uk dj ik,¡ ,slk dksbZ dke uk gksrk

dk'k----- ;s dk'k uk gksrk
,slk dksbZ vYQkt+ uk gksrkAA

अनमोल वचन

- ★ **दुनिया का सारा सौन्दर्य एक स्वस्थ शरीर में है।**
- ★ **धीरज के सामने भयंकर संकट भी धुएं के बादलों की तरह उड़ जाते हैं।**
- ★ **मौका उन्हीं को मिलता है जो इसका फायदा उठाने के लिए हर समय तैयार रहते हैं।**
- ★ **दुनिया एक खूबसूरत किताब है।**

वृद्धाश्रम : वरदान या अभिशाप?

*आयुष दुबे

आज हम 21वीं सदी में जी रहे हैं और आधुनिक कही जाने वाली इस सदी में काफी कुछ ऐसा है जो नया है और हमें अपनी ओर आकर्षित करता है। लेकिन इस नयेपन ने कई पुरानी परंपराओं को ऐसा कुचला है कि हम कहां जा रहे हैं, ये समझ नहीं आ रहा। इसी पुरानी पंरपराओं की विरासत को धराशायी करते हुए समाज में पिछले कुछ सालों में वृद्धाश्रम का चलन प्रारंभ हुआ है जो सुनने में ही बेहद घिनौना लगता है। हम इतने भावनाविहीन कैसे हो गए हैं कि अपने ही घर के बुजुर्गों को उनकी खून–पसीने की कमाई से बने, उनके ही घर से उन्हें एक ऐसे आश्रम में पहुंचा दें जहां उनका कोई अपना न हो, जो प्यार से उनकी जरूरतों को पूरा करे या कोई ऐसा न हो जो उन्हें पापा, दादा या नाना कह कर पुकारे या कोई एक ऐसा जिसके साथ वो घंटों बैठकर अपनी तकलीफों को बांटें। मैं वृद्धाश्रम की कल्पना करता हूं तो ऐसा महसूस होता है कि एक ऐसा कमरा जिसमें कई लोग एक ही उम्र के बैठे हुए हैं और उनके बीच एक नया बुजुर्ग आता है जो झिझक कर एक कोने में बैठ जाता है। सभी के हाथों में चाय का कप और न्यूज़ पेपर है। लेकिन कोई भी उससे बात करना नहीं चाह रहा या उसकी मौजूदगी को अनदेखा किया जा रहा है। लेकिन कभी–कभी नज़रें उसकी ओर घूम जाती हैं और वो ऐसे मुंह चुराता है जैसे उसने कोई गुनाह किया है कि उसके परिवार ने ही उसे इस जेल में भेज दिया है। फिर अचानक बातें शुरू होती होंगी कि क्या हुआ बच्चे नहीं पूछते और वो अकेला इंसान दर्द से रो पड़ता होगा। बिल्कुल ऐसा ही एक सीन जब हम पहली बार स्कूल में जाते हैं तो पुराने पढ़ रहे बच्चे हमें उकसाते, छेड़ते हैं और हम एक कोने में दुबक कर बैठ जाते हैं। लेकिन यह स्थिति स्कूल की स्थिति से काफी डरावनी है क्योंकि स्कूल से जब हम घर आते हैं तो मां के आंचल की ठंडी छाँव और पापा का ढेर सारा दुलार हमें मिलता है लेकिन उन बुजुर्गों को ये सब कहां नसीब है वृद्धाश्रम में।

मेरे मन में कई बार ये सवाल आता है कि क्या ऐसे आश्रम समाज के लिए वरदान हैं? हमारी संस्कृति में माता–पिता को भगवान का दर्जा दिया गया है। ऐसे लोग जो तिनका–तिनका जोड़ कर एक आशियाना बनाते हैं ताकि उनके बच्चे उसमें सुरक्षित रह सकें। अपनी कई जरूरतों को अनदेखा कर एक ही कपड़े को हफ्ते में तीन बार पहनते हैं? मीलों पैदल चलते हैं ताकि उनका बच्चा सड़क के कोने में खड़े टॉफी वाले से कैंडी खरीद कर खा सके और कैंडी पाते ही खुशी से नाच उठे। लेकिन आज प्रश्न इस बात का है कि हम बातें आदर्शवादी करते हैं और हमारी वास्तविकता काफी भद्दी है। क्या ये वृद्धाश्रम घर जैसा माहौल दे सकते हैं? क्या ये सुकून की जिंदगी दे पाते हैं ? इसका सीधा सरल और स्पष्ट उत्तर है कि 'नहीं'।

इसे और बेहतर तरीके से समझने के लिए मैं एक और उदाहरण देता हूं। आज कई बच्चे अपनी पढ़ाई के लिए हॉस्टल में जाते हैं। कई बार शौक से माता–पिता भेजते हैं कि उनका बच्चा अच्छे संस्थान से डिग्री लेकर आए और ये उम्मीद भी होती है कि शायद उनसे दूर रहकर वो पढ़ाई में सुधर जाए। कई बच्चे मजबूरी में भी जाते हैं क्योंकि उन्हें उनके घर के पास के संस्थान में एडमिशन नहीं मिलता। लेकिन उन बच्चों से पूछो कि वो अपने घर वापसी के लिए कितने उतावले होते हैं कि कब छुट्टियां आएं और वो अपने घर जाएं और उनके माता पिता उन्हें प्यार से गले लगाएं।

अब उन बुजुर्गों को देखें जो अपनी उम्र के 80वें वर्ष में हैं और पूरी तरह दूसरे पर आश्रित। उनका सब कुछ छिन चुका है और उनकी धुंधली यादों में बस वो

* भतीजा सुश्री रेखा दुबे, सहायक प्रबंधक (राजभाषा), निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

क्वालिटी टाइम है जिसे उन्होंने अपने परिवार के साथ खुशी से बिताया। इन आश्रमों में वो कितनी पाबंदियों में जी रहे हैं। उनकी पसंद का खाना, उनकी पसंद के टीवी चैनल, बीमारी में डॉक्टर और मंदिर जाने का मन करे तो कोई अपना नहीं जो प्यार से उनके कांपते हाथों को थामे और मंदिर की सीढ़ी से माथा टेक कर ले आए।

भारत के 10 में से 8 आश्रमों के पास पर्याप्त फंड नहीं है, जो उनकी मूलभूत आवश्यकताओं को पूरा कर सकें। ऐसे में ओल्ड एज होम क्या जीवन दे पाते हैं, इसका सटीक जवाब तो बस वही दे सकते हैं जो इस दुर्दशा में जी रहे हैं।

भारतीय संस्कृति की नींव संयुक्त परिवार था जिसमें सुख–दुख साझे थे। ये नई पीढ़ी है जिसने इस परंपरा को सुरक्षित नहीं रखा क्योंकि ओल्ड एज होम इनकी सुविधा है और इनके लिए फायदे का सौदा। उन पीड़ाओं पर उन्हें रंज भर भी मलाल नहीं जो उनके बुजुर्गों को ओल्ड एज होम दे रहे हैं। मैं इस प्रश्न को यहीं छोड़ता हूं और समय की घड़ी को 40 वर्ष आगे सरकाता हूं जब वो भी अकेलेपन, मानसिक अवसाद से गुजरें और उनकी औलादें उनका हाथ पकड़ कर उन्हें ओल्ड एज होम की सीढ़ी पर छोड़ें। तब वे इस प्रश्न का सही उत्तर दे पाएंगे और अपने पुराने दिनों की यादों में दुखी मन बस इतना ही कहेगा कि

Fkd x;k g jkVh d ihN&ihN Hkkx&Hkkx dj
Fkd x;k g lkrh jkrk e tkx&tkx dj
dk'k fey tk, ogh chrk gvk cpiu
Tkc ekrk&fir k f[kykr Fk Hkkx&Hkkx dj
vkj lykr Fk jkrk dk tkx&tkx dj

वृक्ष बन्धु–जगत बन्धु

एक वृक्ष जो लगाता,
सात पीढ़ियों का आशीर्वाद पाता
पथिकों को छाया,
पक्षियों को घर देकर प्रदूषण मिटाता
फल–फूल पत्ते लकड़ी
प्रदान कर वातावरण स्वच्छ बनाता
अनेक रोज़गार का जन्मदाता
बन संसार की दरिद्रता घटाता
ऐसे शुभचिन्तकों के कारण
हम शुद्ध वायु में सांस ले पाते
सचमुच वृक्ष इस खूबसूरत
विश्व के वरदान कहलाते
अच्छे इन्सान जीवन काल में
दस बीस पेड़ लगाते
जन–जन के दुःख दर्द मिटा कर
धरती को स्वर्ग तुल्य बनाते।

वृक्ष शत्रु–जगत शत्रु

*प्रो. बलवन्त रंगीला

एक वृक्ष जो कटवाता
सात पीढ़ियों की बद–दुआएं पाता
सेहत बिगाड़ कर,
परिवार समेत उसे दण्ड देता है विधाता
आओ वृक्ष बन्धुओं का सम्मान करें,
वृक्ष शत्रुओं को समझाएं
मजबूरी में एक वृक्ष जो कटवाएं,
दस–बीस पेड़ ज़रूर लगाएं
विषैले वातावरण से बचना चाहो,
तो पेड़ों से प्रेम बढ़ाओ
स्वयं स्वस्थ रह कर सौ वर्ष जीओ,
'रंगीला' सब को स्वस्थ बनाओ।

* कवि, जी–97, सरिता विहार, नई दिल्ली

वट वृक्ष की छाया

*रजनी सूद

कंबल लेते ही रंजना फूट–फूटकर रोने लगी। साहिल ने जब उसे रोते देखा तो उससे पूछा कि क्यों रो रही हो, उसने कहा, 'कुछ नहीं' और अतीत की यादों में खो गई। धीरे–धीरे उसे सब याद आने लगा कि कैसे वो ब्याह कर आयी थी, सबसे छोटी बहू होने के कारण माँ–बाबूजी की वह लाडली थी, हाँलाकि उसकी दो जेठानियाँ थी, परन्तु माँ–बाबूजी रंजना में ही खोए रहते। पति–पत्नी दोनों ही बेहद संस्कारी। माँ–बाबू जी को उतना ही आदर सम्मान देते जितना कि कोई माँ–बाप अपनी औलाद से उम्मीद करते हैं।

खैर, सृष्टि का चक्र चलता रहा और जिंदगी बीतती रही, रंजना ने एक बेहद सुन्दर बेटे को जन्म दिया। माँ और बाबूजी तो पूरा दिन उसकी नटखट शरारतों को देखते हुए गुजार देते। जब वह सोने जाते तो माँ कहती बहू इसे थोड़ी देर और इसे मेरे पास रहने दे। शादी के बाद से ही माँ और बाबूजी उनके पास रहते थे, क्योंकि जेठ और जेठानियों का बरताव देखकर माँ और बाबूजी उनके पास नहीं रहना चाहते थे। बाबू जी को अपना स्वाभिमान बहुत प्यारा था और माँ जी को बाबू जी की इज्जत। साहिल और रंजना ने उनके स्वाभिमान को बरकरार रखा था।

एक दिन पिता जी के छोटे भाई के यहाँ से उनके बेटे की शादी का निमंत्रण आया। माँ और बाबू जी ने रंजना और साहिल को शादी में जाने के लिए कहा। रंजना वैसे भी शादी के बाद कहीं गई नहीं थी, क्योंकि घर की जिम्मेदारियों से उसको फुर्सत ही नहीं मिलती थी। जब वह अपनी चचिया सास के घर गई तो उन्होंने उसका और साहिल का बड़ी गर्म जोशी से स्वागत किया। चचिया सास ने रंजना से घर परिवार का कुशलक्षेम पूछा, तो रंजना ने माँ बाबू जी की तारीफों के पुल बांध दिए। इस पर चचिया सास ने उसको कहा, रंजना तू बहुत भोली है, तेरी जेठानियों ने कितनी चालाकी से सारी जिम्मेदारियाँ तेरे ऊपर डाल दीं और देख वो दोनों कितनी आजादी से रहती हैं, और तू अपनी गृहस्थी में पिसी रहती है। इंसान पर भले ही किसी की सकारात्मक सोच का उतना असर न पड़ता हो, परन्तु नकारात्मक सोच उस पर जल्द असर करती है। रंजना के साथ भी यही हुआ। शादी अटेंड करने के बाद रंजना के व्यवहार में अचानक बदलाव आना शुरू हो गया, उसे लगा कि चचिया सास ने बिलकुल ठीक कहा था, वो तो बस घर गृहस्थी के चक्रव्यूह में ही फंस कर रह गई है। किसी को उसकी खुशी की कोई परवाह नहीं है। वह तो बस मात्र नौकरानी बनकर रह गई है। नई नवेली बहू का कोई सुख मैंने नहीं भोगा।

वह गुमसुम–सी रहने लगी। तभी एक दिन उसे याद आया कि आज तो उसकी मम्मी का जन्मदिन है। उसने माँ–बाबूजी को कहा, मैं अपनी मम्मी के घर जा रही हूँ, माँ–बाबूजी ने कहा कि चली जाओ। मम्मी के घर जाने पर वह अपनी माँ के गले लिपट गई और बोली मम्मी आपको जन्म दिन बहुत–बहुत मुबारक। माँ ने कुछ देर बाद अपने घर का हाल–चाल बताना शुरू किया कि कैसे उसके भाई–भाभी रिटार्यमेंट का पैसा लेने के बाद उनके साथ नौकरों जैसा बरताव करते हैं और उन्हें ओल्ड–ऐज–होम भेजना चाहते हैं। माँ के आँसू देखकर रंजना भी रो पड़ी और उसने कहा कि वह भईया और भाभी से बात करेगी। उसने अपनी मम्मी से इजाजत ली, तभी उसे ध्यान आया कि गुस्से में वह अपने सास–ससुर के लिए खाने में कुछ भी बनाकर नहीं आई। घर आकर उसने माँ–बाबूजी से पूछा, आप ने कुछ खाया। माँ–बाबू जी ने बताया उन्होंने पपीता खा लिया था। उसने घड़ी में टाईम देखा शाम के 5 बजे थे। उसने माँ–बाबू जी को सूजी का हलवा बनाकर दिया क्योंकि अभी खाने में देर थी, तभी आफिस से साहिल भी आ गया। उसने उसको चाय बनाकर दी और हलवा दिया। साहिल ने कहा, क्या बात है। रंजना ने कहा माँ–बाबू जी की खातिर कम चीनी का हलवा बनाया था। उसके बाद वह रात का खाना बनाने में जुट गई, सबको खाना खिलाने के बाद वह अपने बेटे को लेकर कमरे में आ गई।

साहिल अपने माँ और बाबूजी के पास ही बैठा था। माँ और बाबूजी ने साहिल को दो लाख रुपए का चैक दिया और कहा बेटा, बहू आजकल उदास रहती है पता नहीं क्या बात है। तू उसे कहीं बाहर घुमाने ले जा। माँ और बाबूजी की बातें सुनकर रंजना को बहुत

*वरिष्ठ सहायक प्रबंधक (राजभाषा), निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

शर्मिंदगी महसूस हुई क्योंकि वह सोचती थी कि इन्हें मेरी खुशी का जरा भी ध्यान नहीं। उसने एहसास किया कि माँ और बाबूजी उसे बहू कम बेटी ज्यादा समझते थे। रंजना को ऐसा लगा जैसा वो आत्मग्लानि के कारण मर ही जाएगी, क्योंकि वो भी उन्हें ओल्डएज होम में भिजवाना चाहती थी। चचिया सास की बातों को सुनकर उसकी सोच में बदलाव आ गया था। तभी उसे अपनी मां की बात याद आ गई ^*cPp ugh le>r fd ?kj d cM c|t|x vkxu d oV o{k d leku gkr g tk Hky gh Qy u n ijUr viuh Nk;k vo'; nr g**। हे ईश्वर कैसा है तेरा न्याय, यहाँ मैं अपने सास–ससुर को ओल्डएज होम भेजने की सोच रही थी, उधर मम्मी के घर जाकर मुझे एहसास हुआ कि मैं कितनी गलत थी। ईश्वर का लाख–लाख शुक्र है कि मेरे मन की उथल–पुथल को कोई नहीं समझ पाया था। मैंने अपने सास–ससुर को कितना दुख पहुँचाया, कितनी अवहेलना की, फिर भी उनका मेरे प्रति इतना प्यार, उनके मन की सरलता देखकर मेरी आंखों से आँसू बहने लगे। मैं तेजी से माँ और बाबूजी के गले लगकर जोर–जोर से रोने लगी। माँ और बाबूजी का हाथ मेरे सिर पर था। मैंने दोनों की बांहों को कसकर पकड़ लिया, कभी ना छोड़ने के लिए। वो लगातार मुझसे मेरे रोने का कारण पूछते जा रहे थे, कारण मैं जानती थी या आप।

मन दर्पण

*लोकमणी शर्मा

हर एक मुस्कराहट, मुस्कान नहीं होती,
नफरत हो या मुहब्बत, आसान नहीं होती।
आंसू खुशी के गम के होते हैं एक जैसे,
इन आंसुओं की कोई, पहचान नहीं होती।

हर एक मुस्कराहट............. ।।

हर बात है वहीं पर, मतलब बदल गये हैं,
दिल डगमगा गया था, पर हम सम्भल गये हैं।
ऐसे भी आते हैं दिन, जीते हैं लोग लेकिन,
होता है और सब कुछ, पर जान नहीं होती।

हर एक मुस्कराहट........... ।।

होते हैं इस जहान में, चेहरे भी एक जैसे,
घूंघट भी एक जैसे, सेहरे भी एक जैसे।
सब जानती है नजरें, पहचानती हैं, नजरें,
अपनी पराई सूरत, अन्जान नहीं होती।

हर एक मुस्कराहट............ ।।

क्या चीज है ये दिल भी, हो जाय जब अकेला,
रहता है साथ इसके, यादों का एक मेला।
दुनिया भी छूट जाये, हर आस टूट जाये,
महफिल कभी ये दिल की, बेजान नहीं होती।

हर एक मुस्कराहट........... ।।

* कनिष्ठ अधीक्षक, निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

सेवा

*सच्चिदानन्द राय

सेवा की परिभाषा क्या है?
कोई हमें बताएगा।
सेवा के बदले धोखा दे,
तो फिर सेवा कर पाएगा।।

यह भारत की जनता है,
भारतीयता जानती है।

जो इसको देता है धोखा,
उसको नहीं मिलता मौका।।

सेवा को नीति–शास्त्र कर,
जो इसको समझाएगा।
सच्ची सेवा इस जीवन की,
करके सुखी रह पाएगा।।

* प्रबंधक, आई.सी.डी., पींपरी, पुणे

नया दौर

*हरभजन सिंह

बात है नये दौर की,
जोश और मदहोश की।
क्षण–क्षण के विकास की,
इक्कीसवीं सदी में आए बदलाव की।

आधुनिकता की गली से वह आई,
थी बिल्कुल बेहयाई।
नयनों ने मांग की सर्शत,
और दिल ने भी हां की।

वह था हैरान और
कुछ परेशान।
मांग तो सरकार
भी करती है।

पर ये ना तो सर थी,
न कार थी,
फिर भी,
वह बेजान था।
मांग पूरी कर,
अनजान था।

बात है नये दौर की,
जोश और मदहोश की।

क्षण–क्षण के विकास की,
इक्कीसवीं सदी में आए बदलाव की।

आज तमन्ना थी,
करने की मांग पूरी,
मगर वह बन गई,
गले की मजबूरी,
हौसला कर पूछा आखिर,
बात क्या है सरकार की।

उसने बताई,
दुर्दशा इस समाज की,
वह न तो सरकार थी,
न मांगा था उसने कर।

उलझन में डाल दिया,
अपने गम का इजहार कर।

न नयनों का बाजार था,
न मैला संस्कार था।

घर से बेघर कर दी गई,
बस यही अत्याचार था।
बात है नये दौर की,
जोश नहीं मदहोश की।
क्षण–क्षण में विकास की,
इक्कीसवीं सदी में आए, बदलाव की।

सैलाब सा उठा था,
पत्ता डाली से टूटा था,
ऊँची उड़ान थी,
नीचे गहरी खान थी,
वह मांग रही थी,
काम, कपड़ा–लत्ता।

ठिठुरती ठंड में,
एक ओढ़नी दे रही थी धत्ता।

फिर भी कल इश्क के नुस्खे ने,
कर दिया था बीमार,
दुःख भरी व्यथा सुनकर भी,
नहीं कर पाया था एतबार।

वह था परेशान
और हैरान।
कपड़ा लत्ता देने से,
वह समस्या न सुलझ पायेगी,
शक–वहम की दुनिया में,
वह और उलझ जायेगी।

आदमियों के जंगल में,
था धर्मशाला का रास्ता,
जैसे बहुत धर्मात्मा हो,
मगर न फर्ज से वास्ता,
तभी तो आज नेता, बुजुर्ग सभी,
चरित्रवान हैं,
क्योंकि वे फर्ज से बिल्कुल,
अंजान हैं,
काश कि ऐसा दौर आये,
बेहयाई निकले और
हया घर,
वापिस आये।

* सहायक प्रबंधक (सामान्य), निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण विभाग और केन्द्रीय भंडारण निगम के बीच समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर

केन्द्रीय भंडारण निगम ने खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण विभाग, उपभोक्ता मामले, खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण मंत्रालय के साथ वर्ष 2015–16 के लिए विभिन्न भौतिक एवं वित्तीय लक्ष्य निर्धारित करने हेतु दिनांक 26 मार्च, 2015 को श्री सुधीर कुमार, सचिव, खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण विभाग तथा श्री हरप्रीत सिंह, प्रबंध निदेशक, केन्द्रीय भंडारण निगम ने मंत्रालय के वरिष्ठ अधिकारियों तथा निगम के प्रकार्यात्मक निदेशकों की उपस्थिति में समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किये।

केन्द्रीय भंडारण निगम और आईडीबीआई के बीच समझौता ज्ञापन

केन्द्रीय भंडारण निगम और आईडीबीआई बैंक के बीच हस्ताक्षरित समझौता ज्ञापन के अवसर पर बैंक के मुख्य महाप्रबंधक वाई.पी. गुप्ता, निगम के महाप्रबंधक श्री आर.एन. मीणा तथा प्रबंध निदेशक श्री हरप्रीत सिंह सहित अन्य उच्च अधिकारीगण।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम) दिल्ली द्वारा निगम को राजभाषा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य निष्पादन के लिए पुरस्कार

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम) दिल्ली द्वारा आयोजित पुरस्कार वितरण समारोह में श्रीमती पूनम जुनेजा, संयुक्त सचिव (राजभाषा) भारत सरकार से राजभाषा के क्षेत्र में वर्ष 2013–14 के लिए उत्कृष्ट कार्य निष्पादन का विशेष प्रशंसा पुरस्कार तथा नराकास के तत्वावधान में निगम द्वारा निबन्ध प्रतियोगिता के सफल आयोजन हेतु सम्मानस्वरूप ट्राफी एवं प्रमाण पत्र प्राप्त करते हुए निगम के निदेशक (कार्मिक) श्री जे.एस. कौशल। साथ में हैं निगम के राजभाषा अधिकारी

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम) दिल्ली के तत्वावधान में आयोजित वाद–विवाद प्रतियोगिता का प्रथम पुरस्कार सुश्री रुचि यादव, वरिष्ठ सहायक प्रबंधक तथा श्री हरभजन सिंह, सहायक प्रबंधक, हिन्दी लघु कथा लेखन का तृतीय पुरस्कार संयुक्त सचिव (राजभाषा), राजभाषा विभाग, भारत सरकार से प्राप्त करते हुए।

संसदीय राजभाषा समिति द्वारा आईसीडी, पुणे का राजभाषा निरीक्षण

माननीय संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उपसमिति द्वारा दिनांक 15.01.2015 को आईसीडी, पुणे का राजभाषा निरीक्षण किया गया। इस अवसर पर श्री जे.एस. कौशल, निदेशक (कार्मिक) ने समिति के संयोजक डॉ. प्रसन्न कुमार पाटसाणी तथा अन्य गणमान्य सांसदों का बुके से स्वागत किया। माननीय समिति ने निरीक्षण के दौरान आईसीडी में राजभाषा कार्यान्वयन में हुई प्रगति पर संतोष व्यक्त करते हुए राजभाषा की प्रगति के संबंध में अपने बहुमूल्य सुझाव भी दिए। इस अवसर पर आयोजित राजभाषा प्रदर्शनी का अवलोकन करते हुए माननीय सदस्यों ने प्रसन्नता व्यक्त की।

सचित्र गतिविधियाँ

गणतंत्र दिवस के अवसर पर निगमित कार्यालय के प्रांगण में ध्वजारोहण करते हुए निगम के प्रबंध निदेशक श्री हरप्रीत सिंह तथा अन्य वरिष्ठ अधिकारीगण

विज्ञान भवन, नई दिल्ली में दिनांक 12–13 फरवरी 2015 को 'वुमेन इन पब्लिक सेक्टर फोरम' के वार्षिक सम्मेलन के रजत जयन्ती वर्ष के अवसर पर उपस्थित निगम की महिला अधिकारी श्रीमती मिताली गुहा, प्रबंधक, सुश्री रुचि यादव, वरिष्ठ सहायक प्रबंधक एवं श्रीमती मीनाक्षी गंभीर वरिष्ठ निजी सहायक

निगमित सामाजिक दायित्व के अधीन उत्तर प्रदेश के रामपुर जिला हापुड़ के पूर्व माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों हेतु पीने के पानी तथा फर्नीचर की वित्तीय सहायता प्रदान करने के अवसर पर निगम के निदेशक (कार्मिक) श्री जे.एस. कौशल

निगम के प्रशिक्षण संस्थान, हापुड़ में दिनांक 12–21 मार्च, 2015 के दौरान आयोजित 153वां अखिल भारतीय वेअरहाउसिंग प्रशिक्षण पाठ्यक्रम के अवसर पर निदेशक (कार्मिक) के साथ नए भर्ती हुए कनिष्ठ तकनीकी सहायकों का सामूहिक चित्र

सचित्र गतिविधियाँ

निगमित कार्यालय में दिनांक 24.02.2015 को आयोजित हिन्दी कार्यशाला के अवसर पर निदेशक (कार्मिक), महाप्रबंधक (कार्मिक) एवं अतिथि वक्तागण

निगमित कार्यालय में दिनांक 24.02.2015 को आयोजित हिन्दी कार्यशाला में भण्डारण भारती अंक–55 के विमोचन अवसर पर निदेशक (कार्मिक), महाप्रबंधक (कार्मिक) एवं अतिथि वक्तागण

निगमित कार्यालय में दिनांक 24.02.2015 को आयोजित हिन्दी कार्यशाला के अवसर पर अधिकारियों एवं कर्मचारियों को संबोधित करते हुए श्री जे.एस. कौशल, निदेशक (कार्मिक)

निगमित कार्यालय में दिनांक 24.02.2015 को आयोजित हिन्दी कार्यशाला के अवसर पर उपस्थित अधिकारी एवं कर्मचारीगण

प्रशिक्षण संस्थान हापुड़ में 27.03.2015 को ''आईओ/पीओ के लिए आयोजित तीन दिवसीय प्रशासनिक सतर्कता'' कार्यक्रम के दौरान समापन भाषण देते हुए श्री एस.एस. बधावन, मुख्य सतर्कता अधिकारी

प्रशिक्षण संस्थान हापुड़ में 27.03.2015 को ''आईओ/पीओ के लिए आयोजित तीन दिवसीय प्रशासनिक सतर्कता'' कार्यक्रम के अवसर पर मुख्य सतर्कता अधिकारी एवं अन्य अधिकारियों के साथ प्रशिक्षणार्थियों का सामूहिक चित्र

निगमित कार्यालय में आयोजित स्थापना दिवस समारोह की झलकियाँ

निगमित कार्यालय में आयोजित स्थापना दिवस समारोह की झलकियाँ

क्षेत्रीय कार्यालयों में आयोजित स्थापना दिवस समारोह की झलकियाँ

क्षेत्रीय कार्यालयों में आयोजित स्थापना दिवस समारोह की झलकियाँ

क्षेत्रीय कार्यालयों में जनवरी-मार्च 2015 में आयोजित हिंदी कार्यशाला की झलकियाँ

निगमित कार्यालय में आयोजित बैडमिंटन एवं क्रिकेट टूर्नामेंट की सचित्र गतिविधियाँ

*राजीव विनायक

निगम द्वारा खेलों को बढ़ावा देने के लिए प्रतिवर्ष गणतंत्र दिवस के अवसर पर बैडमिंटन प्रतियोगिता का आयोजन किया जाता है। इसी श्रंखला में इस वर्ष भी इस प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें निगम के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। इसके अतिरिक्त 28.02.2015 को निगमित कार्यालय तथा क्षेत्रीय कार्यालय चंडीगढ़ एवं पंचकुला के बीच क्रिकेट मैच का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन श्री जे.एस. कौशल, निदेशक (कार्मिक) ने किया। इसके अतिरिक्त निगम की टेबल टेनिस टीम ने 2–5 मार्च 2015 तक नई दिल्ली में आयोजित अखिल भारतीय सार्वजनिक क्षेत्र टेबल टेनिस टूर्नामेंट में भाग लिया।

बैडमिंटन टूर्नामेंट का उद्घाटन करते हुए प्रबंध निदेशक श्री हरप्रीत सिंह एवं निदेशक (कार्मिक) श्री जे.एस. कौशल

प्रबंध निदेशक तथा अन्य वरिष्ठ अधिकारियों के साथ बैडमिंटन टूर्नामेंट के प्रतिभागियों का सामूहिक चित्र

मैन्स डबल्स खेलते हुए श्री एन.के. ग्रोवर, महाप्रबंधक (वित्त एवं लेखा) एवं श्री बी.एस. रावत, वेअरहाउस सहायक–I

बैडमिंटन टूर्नामेंट में भाग लेती हुई सुश्री रुचि यादव, वरिष्ठ सहायक प्रबंधक एवं श्रीमती मीनू जैन, कनिष्ठ अधीक्षक

क्रिकेट टूर्नामेंट का उद्घाटन करते हुए निदेशक (कार्मिक) श्री जे.एस. कौशल

निगम के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ दिल्ली एवं पंजाब रीजन की क्रिकेट टीम

* खेल सचिव, निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

प्यार व नफरत

*पी.सी. भट्ट

न जाने कहाँ खो गये वो रिश्ते,
समझते थे जिन्हें हम कभी फरिश्ते।

जब भी नई पीढ़ी ने गरदन उठाई है,
पुराने रिश्तों ने कीमत चुकाई है।

दादा–दादी, नाना–नानी, चाचा–चाची,
फूफा–फूफी, मामा–मामी, ताऊ–ताई।

पूछता आज का युवा मुझसे–आपसे,
इस जमाने में ये कौन है भाई।

ये मेरे नहीं मॉम–डैड के हैं रिश्तेदार,
मैं भला क्यों रखूं, इनसे सरोकार।

बेटा बाप को मार रहा, भाई–भाई को,
ऐसे युवा क्या निभा पायेंगे संस्कारों को।

अब अपना ही खून अपनों को नहीं अपना पायेगा,
ऐसे समाज का हिस्सा दूसरी कौम कैसे अपनाएगा।

सबको जरूरत है एक सबक 'मोहब्बत' की,
मिटा दे जो नफरत रिश्तों और कौमों की।

अपनों से अपनों को 'नफरत' ही दूर करती है,
'प्यार' तो मानव व जानवर की दूरी भी भरती है।

आज की पीढ़ी हर चीज को चाहती है सीमित करना,
'शॉर्टकट' का जमाना है रिश्ते भी 'शॉर्ट' रखना।

'प्यार' को लम्बा रखो 'नफरत' शॉर्ट करो भाई,
तभी तुम्हारी, हमारी व समाज की है इसमें भलाई।

* भण्डारण एवं निरीक्षण अधिकारी (सेवानिवृत), निगमित कार्यालय नई दिल्ली

भोर हुई मुसाफिर, अब चल तू अपनी चाल...

*स्नेहा मिश्रा

भोर हुई मुसाफिर, अब चल तू अपनी चाल...
सपनों की जमीन का वह आसमान बेहद काल था...
पर उस रात भी जगमगाते सितारों का सहारा था.
सूरज के आगाज़ पर सिमट रही थी उन सितारों की बारात,
ले चले सब उस रात को अपने साथ...
भोर हुई मुसाफिर, अब चल तू अपनी चाल...

शतरंज के काले–सफेद रंगो से खेल तू
अपनी जीत की सुनहरी चाल...
जो पाया वह तेरा...
जो खोया वह भी तेरी कहानी...
भोर हुई मुसाफिर, अब चल तू अपनी चाल...

कहानी के हर किरदार को इस तरह निभा कि
राजा की शान तुझमें और फकीर का मान दिल में हो.
तूफान से पहले की वह ख़ामोशी और जीत का वह शोर
तुझे याद आएगा...
जब भी तू रुक जाएगा.
भोर हुई मुसाफिर, अब चल तू अपनी चाल

* पुत्री श्री जय प्रकाश मिश्रा, कंप्यूटर ऑपरेटर (अनुबंध पर) निगमित कार्यालय

निगम का तुलनात्मक कार्य–निष्पादन

fnukad	{kerk ¼yk[k Vu esa½	{kerk mi;ksx	ifr'krrk
01.02.2014	102.84	84.32	82
01.02.2015*	107.79	85.84	79.64
01.01.2015	105.18	82.49	78.42
01.03.2014	103.01	83.34	81
01.03.2015*	112.00	93.49	83.47
01.02.2015	108.52	87.32	80.46
औसत (अप्रैल 2014 – फरवरी 2015)	105.29	84.43	80.19
औसत (अप्रैल 2013 – फरवरी 2014)	105.59	91.40	86.56
01.04.2014	104.94	83.71	80
01.04.2015*	114.58	96.61	84
01.03.2015	113.31	93.00	82
औसत (2014 –2015)*	106.18	85.41	80
औसत (2013 –2014)	105.55	90.76	86

*(अनंतिम)

जनवरी से मार्च, 2015 के दौरान आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम

Øe- l-	dk;Øe dk 'kh"kZd	dk;Øe vof/k
1.	वेअरहाउस निरीक्षण	5–7 जनवरी, 2015
2.	कीटनाशन एवं कीट नियंत्रण तकनीक	12–14 जनवरी, 2015
3.	आईएसओ 9001: 2008, 14001 एवं ओएचएसएएस: 18001, के लिए पुनश्चर्या पाठ्यक्रम	19–20 जनवरी, 2015
4.	राजभाषा प्रशिक्षण	29–30 जनवरी, 2015
5.	कर प्रबन्धन–आयकर एवं सेवाकर	2–4 फरवरी, 2015
6.	153वां अखिल भारतीय वेअरहाउसिंग प्रशिक्षण पाठ्यक्रम	12–21 मार्च, 2015
7.	सूचना का अधिकार अधिनियम, 2005 एवं इसका इम्पलीकेशन	23–24 मार्च, 2015
8.	आईओ/पीओ के लिए प्रशासनिक सतर्कता	25–27 मार्च, 2015

सेवानिवृत्ति के अवसर पर निगम परिवार अपने निम्नलिखित अधिकारियों एवं कर्मचारियों के सुखद भविष्य, उत्तम स्वास्थ्य एवं समृद्धि की कामना करता है।

¼fnukd 01 tuojh] 2015 l 31 ekp] 2015 rd lokfuoÙk vfèkdkjh ,o depkjh½

Ø- l-	uke	inuke	rSukrh LFkku	{ks=
1	राम किशोर केन	समप्र (लेखा)	नि.का. क्रय विभाग	नि.का.
2	अभय सिंह	समप्र (सा.)	क्षे.का. मुम्बई	मुम्बई
3	शेक चिंगाशा साहब	सप्र (सा.)	क्षे.का. नवी मुम्बई	नवीं मुम्बई
4	आर बालू	अधि.अभि. (सी)	सै.वे. कुड्डालौर	चेन्नई
5	के.पी. सिंह	अधि.अभि. (सी)	नि.का. अभियांत्रिकी विभाग	नि.का.
6	यादराम सिंह	अधि.अभि. (ई)	नि.का. क्रय विभाग	नि.का.
7	एन. आनन्दा राव	कनि.अधी.	काकीनाडा	हैदराबाद
8	बलराज सिंह	कनि.अधी.	जहाँगीराबाद–।।	लखनऊ
9	ओ.पी. सिंह	कनि.अधी.	मउनाथ भंजन	लखनऊ
10	सत्यपाल	कनि.अधी.	कलानौर	पंचकुला
11	बिरेन्द्र सिंह	वसप्र (सा.)	आईसीडी, भदौई	लखनऊ
12	वी.एस. यादव	एसआईओ	सहारनपुर बेस डिपो	लखनऊ
13	ए. नारायण	एसआईओ	सीएफएस, टूटीकोरिन	चेन्नई
14	कुवंरपाल सिंह	एसआईओ	कासना	दिल्ली
15	के.पी. सिंह	एसआईओ	काशीपुर–।।	लखनऊ
16	विनोद राज गुप्ता	अधीक्षक	सीएफएस, डी नोड	नवीं मुम्बई
17	श्रीमती मंजुला मल्होत्रा	अधीक्षक	क्षे.का. दिल्ली	दिल्ली
18	आर.पी. पटेल	वे.स.–।	इंदौर–।।	भोपाल
19	एस.एन. रविदास	वे.स.–।	फतूवाहा	पटना
20	बी.बी काम्बले	वे.स.–।	मिराज	मुम्बई
21	पहल सिंह	वे.स.–।	सहारनपुर बेस डिपो	लखनऊ
22	राम कुमार	वे.स.–।	नाभा बेस डिपो	चण्डीगढ
23	श्रीमती सज्जन कवंर	वे.स.–।	कोटा–।	जयपुर
24	सुरेश प्रसाद	वे.स.–।	आई एंड ई, कोलकाता	कोलकाता
25	आई सम्पदा राव	वे.स.–।	रायनापाडू	हैदराबाद
26	एस.आर. स्वामी	वे.स.–।	गुलबर्ग–।	बंगलौर
27	तेज नारायण सिंह	वे.स.–।	बलिया	लखनऊ
28	आर.के. अवस्थी	स. अभि. (विद्युत)	शाहजहांपुर	लखनऊ
29	डॉ. ए.के. गोयल	समप्र (तक)	क्षे.का. दिल्ली	दिल्ली
30	कवंर सिंह	अधि. अभि.(सी)	नि.का. अभियांत्रिकी विभाग	नि.का;
31	ईश्वर चन्द	कनि.अधी.	मउनाथ भंजन	लखनऊ
32	श्रीमती रचना देवी	कनि.अधी.	कीर्तिनगर	दिल्ली
33	एस. रंजन देब	कनि.अधी.	बोनहुग्ली	कोलकाता
34	जयवीर सिंह	कनि.अधी.	उकलाना	पंचकुला
35	एस.के. सिंह	कनि.अधी.	सोपाल	पटना

Ø- l-	uke	inuke	rukrh LFkku	{k=
36	सी.एम. टक्के	कनि.अधी.	अमरावती	मुम्बई
37	के.जे. चह्वाण	कनि.अधी.	अजंनगाँव	मुम्बई
38	वी.के. मल्होत्रा	प्र.नि. सचिव	नि.का. योजना विभाग	नि.का.
39	राम दुलार	एसआईओ	क्षे.का. लखनऊ	लखनऊ
40	जी.एफ; करूणाकरण	एसआईओ	क्षे.का. चेन्नई	चेन्नई
41	रविन्द्र मिश्रा	एसआईओ	बस्ती	लखनऊ
42	सतीश कुमार	अधीक्षक	मानसा	चंडीगढ
43	एस.सी. बतरा	अधीक्षक	नि.का. कार्मिक विभाग	नि.का.
44	अजीत कुमार	अधीक्षक	क्षे.का. लखनऊ	लखनऊ
45	ए. सुब्बा रेड्डी	अधीक्षक	क्षे.का. बंगलौर	बंगलौर
46	मो. दाऊद शरीफ	अधीक्षक	रायगढ़	भुवनेश्वर
47	जगतार सिंह	अधीक्षक	क्षे.का. चण्डीगढ	चंडीगढ
48	त्रिलोचन सिंह	अधीक्षक	आईसीपी, अटारी	चंडीगढ
49	एस.पी. पठारकर	अधीक्षक	नासिक–।	मुम्बई
50	एम. राजेन्द्रन	अधीक्षक	मादूर	बंगलौर
51	काशी नाथ मलिक	वे.स.–।	सीएफएस, कोलकाता	कोलकाता
52	विक्रम सिंह	वे.स.–।	देवास	भोपाल
53	वी.राम गोपाल	सप्र (सा.)	सीआरडब्ल्यूसी, सनत	हैदराबाद
54	पी.एल. श्रीवास्तव	स.अभि. (सी)	सै.वे. साहिबाबाद	सीसी दिल्ली
55	गोविन्दा स्वामी	अधि.अभि.(सी)	सीसी, बंगलौर	चेन्नई
56	कृष्ण गोपाल	अधि.अभि.(सी)	मयूर विहार, दिल्ली	सीसी दिल्ली
57	हरमेश सिंह	हैल्पर	नि.का. तकनीकी विभाग	नि.का.
58	हित लाल	कनि.अधी.	दूमरीगंज	लखनऊ
59	आर. पदमाशेखरन	कनि.अधी.	थंजावूर–।	चेन्नई
60	एम. जॉन	कनि.अधी.	सीएफएस, वीरूगम्बक्कम	चेन्नई
61	सी.एच. उपेन्द्र	कनि.अधी.	नामपल्ली	हैदराबाद
62	बाल किशन शर्मा	कनि.अधी.	नि.का. निरी. विभाग	नि.का.
63	वी.के. खरे	कनि.अधी.	भिंड	भोपाल
64	वी.वी. पांडेय	एसआईओ	थानगढ़	अहमदाबाद
65	एन.पी. सिंह	एसआईओ	नि.का. क्रय विभाग	नि.का.
66	अमित कुमार घोष	एसआईओ	क्षे.का. कोलकाता	कोलकाता
67	अशोक कुमार गुप्ता	एसआईओ	सीएसफएस, कांडला	अहमदाबाद
68	श्रीमती अमृत कौर मोखा	अधीक्षक	नि.का. वित्त विभाग	नि.का.
69	श्रीमती एम.जे. देसाई	अधीक्षक	एमएस जेठा	मुम्बई
70	राम अवतार	वे. स.–।	क्षे.का. लखनऊ	लखनऊ
71	एस. संथनम	वे. स.–।	थंजावूर–।।	चेन्नई
72	के.वाई. नागेह	वे. स.–।	मंडया	बंगलौर
73	के.एस. प्रधान	वे. स.–।	सासन	भुवनेश्वर
74	ए.पी. चौधरी	वे. स.–।	सारूल	कोलकाता

पैस्ट नियंत्रण परिचालनों के पश्चात् ग्राहकों द्वारा रखी जाने वाली सावधानियाँ

ऐसा करें

- सभी खाद्य पदार्थों को एअर टाइट कंटेनरों में रखें अथवा पूरी तरह ढक कर रखें।
- जिस क्षेत्र को कीटनाशक द्वारा उपचारित किया गया है, उससे बच्चों, वृद्धों, रोगियों एवं पालतू जानवरों को दूर रखें।
- कृपया पैस्ट कन्ट्रोल ऑपरेटर से परिसर का पूरा क्षेत्र अर्थात् स्टोर, स्नानागार/शौचालय, शयन कक्षों आदि में छिड़काव/उपचार करवाएं।
- पैस्ट कन्ट्रोल ऑपरेशन के पश्चात् परिसरों को कम से कम २ घंटे के लिए बंद रखें।
- परिचालनों के दौरान फर्श पर बिखरे रसायन के घोल को हटाने के लिए फर्श को अच्छी प्रकार पोंछे/धोएं ताकि पालतू जानवरों, बच्चों आदि को विषैले तत्वों से बचाया जा सके।
- परिसरों में प्रवेश करने से पहले सभी दरवाजे, खिड़कियां तथा रोशनदान खोल दें और लगभग एक घंटे तक पंखे चला दें।
- परिचालनों के लिए प्रयोग किए गए कीटनाशकों का नाम एवं गुणवत्ता के बारे में पेस्ट कन्ट्रोल ऑपरेटर से अवश्य पूछें।

ऐसा न करें

- कीटनाशक द्वारा उपचारित क्षेत्र में विषैले प्रभाव से बचने के लिए पालतू जानवरों एवं बच्चों को न जाने दें।
- रसोई के सामान को डिटर्जेंट एवं पानी से पूरी तरह धोए बिना प्रयोग न करें।
- यदि कीटनाशक उपचार के समय कोई खाद्य पदार्थ अथवा अन्य खाने योग्य वस्तु बिना ढके रह गई है तो उसका प्रयोग न करें।
- विषैले प्रभाव से बचने के लिए उपचारित कक्षों के दरवाजों, खिड़कियों अथवा दीवारों को न छुएं।
- कीटनाशन उपचार के दौरान सामने खुले पड़े रह गए कपड़ों को न पहनें।

18 क्षेत्रीय कार्यालय

464 वेअरहाउस

केन्द्रीय भण्डारण निगम

(भारत सरकार का उपक्रम)

4/1, सीरी इंस्टीच्यूशनल एरिया,
अगस्त क्रांति मार्ग, हौज खास,
नई दिल्ली-110 016